सम्पादकीय

गोदुग्ध का औषधीय महत्वांकन

गव्यं क्षीरं पथ्यमप्ययन्तरुच्यं, स्वादु स्निग्धं पित्तवातामयध्नम।
कान्तिं प्रज्ञां बुद्धिमेधांगपुष्टिं, धत्ते स्पष्टं व्वीर्य्यवृद्धिं विद्यते।।

अर्थात् गाय का दूध पथ्य, अत्यंत रुचिकारी, स्वादिष्ट, स्निग्ध, पित्त और वातरोगनाशक, कांतिजनक एवं प्रज्ञा–बुद्धि–मेधा, अंग में पुष्टि करने वाला तथा वीर्य बढ़ाने वाला होता है।

प्राचीनकाल से ही हमारे राष्ट्र में औषधि एवं खाद्य की दृष्टि से गाय के दूध की महत्ता को आयुर्वेदिक मनीषियों ने परख लिया था। गाय का दूध प्राणप्रद, वात–पित्तनाशक, पौष्टिक एवं रसायन है। इसके साथ ही धारोष्ण दुग्ध का सेवन सर्वरोगविनाशक माना गया है। आयुर्वेद के अनुसार विभिन्न रंग वाली गायों के दूध का पृथक–पृथक विशेष गुण होता है। उनमें भी काली गाय का दूध त्रिदोषनाशक, परमशक्तिवर्द्धक एवं सर्वोत्तम होता है। इतना ही नहीं सूर्योदय के समय, दोपहर के समय तथा सायंकाल के समय दुहा हुआ दूध अलग–अलग प्रकार से शरीर पर प्रभाव डालता है। इस दृष्टि से सुबह के समय दूध वीर्यवर्द्धक व अग्निदीपक तथा दोपहर में बलकारक, कफ–पित्त को नष्ट करने वाला, मंदाग्नि को हरने वाला, बालपन में वृद्धि करने वाला एवं वृद्धावस्था में क्षयनाशक व शुक्रवर्धक होता है। रात्रि में प्रतिदिन सेवन करने से दूध अनेक दोषों को दूर करता है। इसीलिए दूध सर्वदा सेवनीय है। गाय अन्य प्राणियों की अपेक्षा सत्वगुण–प्रधान होती है, क्योंकि सभी देवी–देवताओं का इसमें वास होता है। अतः दैवीशक्ति के योग से गोदुग्ध में सात्विक बल आ जाता है। दूध से शरीर आदि की पुष्टि के साथ ही भोजन का परिपाक भी विधिवत हो जाता है। यह कभी रोग उत्पन्न नहीं होने देता। सावधानी के तौर पर गाय के दूध को हमेशा छानकर ही पीना चाहिए, क्योंकि दुग्ध–दोहन के समय स्तनों पर रोम होने के कारण दुहने में घर्षण से अधिकतर रोम टूट कर दूध में गिर जाते हैं और पेट में बाल चले जाने से हानि होती है। आयुर्वेद के अनुसार किसी भी प्राणी का बाल पेट में पहुंच जाने से राजयक्ष्मा (टी.बी.) आदि रोग भी संभव हो सकते हैं, इसीलिए दूध को छानकर पीना अनिवार्य है। गोदुग्ध के प्रमुख औषधीय उपयोग निम्नानुसार किये जा सकते हैं :–

1. प्रातः काल हल्के गर्म दूध का सेवन पाचन–क्रिया को संयोजित करने में सहायक होता है। 2. गर्म दूध में मिश्री और कालीमिर्च मिलाकर लेने से सर्दी–जुकाम ठीक हो जाता है। 3. दूध में सबसे कम कोलेस्ट्रॉल (14 ग्राम/100ग्राम) होने के कारण मधुमेय के रोगियों को वसारहित दूध सेवन की सलाह दी जाती है। 4. अग्निवर्धक व्रण (Peptic Ulcer) के रोगियों के लिए गोदुग्ध एक आदर्श आहार है। 50 मि. ली. ठंडे दूध में एक चम्मच चने का सत्तू दो–दो घंटे पर देने से अल्सर में शीघ्र ही लाभ मिलता है। 5. गाय के दूध में गाय का ही घी मिलाकर पीने से शरीर पुष्ट होता है। 6. रक्त–विकार वाले रोगी के लिए गोदुग्ध सर्वोत्तम होता है। 7. एक कप गोदुग्ध में 200 मिली. एरंड तेल मिलाकर सेवन करने से मल विबन्ध में लाभ होता है। 8. गठिया रोग में गर्म गोदुग्ध में 5 ग्राम अश्वगंधा चूर्ण मिलाकर सेवन करने से फायदा होता है। 9.सिरदर्द में गाय के दूध में एक इलायची उबालकर पियें। 10. गोदुग्ध में चूने का पानी मिलाकर पीने से मूत्र कृच्छ (Dysuria) में आराम मिलता है। 11 स्त्रियों को दूध बढ़ाने के लिए गाय के दूध में सतावर चूर्ण एवं मिश्री मिलाकर सेवन करना चाहिए। 12. बार–बार गर्भच्युति (Abortion) होने पर अश्वगंधा चूर्ण को गाय के दूध में मिलाकर पीने से लाभ होता है। 13. हृदय रोग में गोदुग्ध में अर्जुन छाल का चूर्ण एवं गुड़ मिलाकर सेवन करना चाहिए। 14. बवासीर (Piles) में गाय के दूध में नागकेशर एवं मिश्री मिलाकर पीने से लाभ मिलता है। 15. गोदुग्ध पीने से सात्विक विचार, मानसिक शुद्धि एवं बौद्धिक विकास होता है। वस्तुतः गोदुग्ध इस मृत्युलोक का अमृत ही है। कहा गया है –

'' अमृतं क्षीर भोजनम्।''

गोसम्पदा

वर्ष - 14
अंक - 6
अप्रैल - 2013

संरक्षक :
श्री खेमचन्द जी
राष्ट्रीय संगठन मंत्री, गोरक्षा आयाम
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली -22
मो. : 09910265221
ईमेल : gosampada@gmail.com

प्रकाशक :
श्री निरोती लाल अग्रवाल जी
संकट मोचन आश्रम सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 09468681263

सम्पादक :
जय प्रकाश भारद्वाज

कार्यकारी सम्पादक :
देवेन्द्र नायक
मो. 9868559060
कार्या. 011- 26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता :
श्री एम. आर. विरमानी

प्रचार-प्रसार प्रमुख :
मा. ठा. जयबहादुर सिंह शेखावत,
जयपुर

श्री जगदीश जी अग्रवाल 'हरीओम'
अमरावती, मो. 09420721734

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672
कार्या. : 011- 26174732

सहयोग राशि
वार्षिक : रुपये 100/-
छः वर्ष हेतु : रुपये 500/-
आजीवन : रुपये 1100/-

इस अंक में.....

"श्रीराम जप-यज्ञ" का वर्ष प्रतिपदा (11 अप्रैल) से शुभारंभ 04

बीफ का बढ़ता निर्यात और दूध का संकट 06

गाय और गुरुजी 09

'राम रहीम' और 'गरीब नवाज' 10

स्वावलम्बन में भारतीय गाय की भूमिका 12

गोमाता की रक्षा एवं सामाजिक समरसता ही परम धर्म 15

दिनचर्या-ऋतुचर्या 16

गो-आधारित कृषि की घोर उपेक्षा 18

ऐतिहासिक रही बैलगाड़ी यात्रा 20

दिल्ली में पंचगव्य चिकित्सालय शुरू 21

गाय की रक्षा जरूरी : अनिल जोशी 22

बूचड़खाना खुला तो आंदोलन करेंगे : खेमचंद शर्मा 23

Cattle Politics 24

गोघृत एवं पंचगव्य मिलने का स्थान :

विहिप केन्द्रीय कार्यालय :
संकट मोचन आश्रम, हनुमान मंदिर,
रामकृष्णपुरम, सैक्टर-6, नई दिल्ली,
फोन : 011-26178992

भाजपा कार्यालय :
11 अशोक रोड, नई दिल्ली
दूरभाष 23007500

श्री लवकेश गौड़ :
के-101, प्राचीन शिव मंदिर,
जी. टी. करनाल रोड,
इन्द्र धर्मकांटा, गुरुद्वारा नानक प्याऊ,
दिल्ली - 110033
मो. : 9891266534
9136358469

अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए संपूर्ण देश में

"श्रीराम जप–यज्ञ" का वर्ष प्रतिपदा (11 अप्रैल) से शुभारंभ

महाकुम्भ क्षेत्र, प्रयागराज में श्रीराम मन्दिर निर्माण हेतु पू. सन्त समाज द्वारा घोषित जन–जागरण कार्यक्रम/श्रीराम जप–यज्ञ अनुष्ठान का सम्पूर्ण देश में वर्ष प्रतिपदा (11 अप्रैल) से शुभारंभ हो गया है। इस अनुष्ठान को सफलीभूत करने हेतु कार्यकर्ताओं का आह्वान करते हुए विहिप महामंत्री श्री चम्पत राय ने कहा है कि तीर्थराज प्रयाग में पूर्णकुम्भ के पावन अवसर पर 7 फरवरी, 2013 को धर्मसंसद एवं सन्त महासम्मेलन आयोजित किया गया था। दोनों कार्यक्रमों में सन्तों की संख्या तथा उत्साह अभूतपूर्व था। सम्मेलन अनवरत 5 घण्टे तक चलता रहा। सभी वक्ता–सन्तों ने श्रीराम जन्मभूमि पर शीघ्र भव्य मन्दिर निर्माण करने हेतु जहाँ हुंकार भरी, वहाँ कपड़े के मन्दिर में विराजमान रामलला की वर्तमान स्थिति पर आक्रोश भी व्यक्त किया।

पूज्य सन्तों ने श्रीराम जन्मभूमि पर शीघ्र भव्य मन्दिर–निर्माण का संकल्प लिया है। सन्तों ने विजय महामन्त्र (श्रीराम जय राम जय जय राम) का जप–यज्ञ अनुष्ठान शुरू कर दिया है। सन्तों ने इच्छा व्यक्त की है कि हर हिन्दू परिवार 11 अप्रैल, 2013 ईस्वी (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, वर्ष प्रतिपदा, विक्रमी सम्वत्–2070) से 13 मई, 2013 (वैशाख शुक्ल तृतीया, अक्षय तृतीया) तक कुल 33 दिन का संकल्प कर इस जप–यज्ञ में सहभागी बने और जन–जन को सहभागी बनायें।

देशवासियों से निवेदन है कि आप वर्तमान में प्रचलित प्रचार के सभी माध्यमों का उपयोग करें। टेलीविजन चैनल, दैनिक/साप्ताहिक/पाक्षिक पत्र–पत्रिकाओं/जागरण पत्रिकाओं में सन्तों के द्वारा घोषित कार्यक्रम का प्रकाशन कर जप–यज्ञ कार्यक्रम को जन–जन तक पहुंचाने का प्रयास करें।

जप–यज्ञ सम्बन्धी अन्य सूचनाएँ

11 अप्रैल वर्ष प्रतिपदा के दिन मन्दिरों में सामूहिक सपरिवार एकत्र आकर जप–यज्ञ का संकल्प, 13 माला जप, सन्तों के प्रवचन से कार्यक्रम का प्रारम्भ करें। विश्व हिन्दू परिषद का प्रखण्ड स्तर तक का दायित्ववान कार्यकर्ता न्यूनतम 5 ग्रामों में जप–यज्ञ कार्यक्रम प्रारम्भ कराये। नगरों के कार्यकर्ता जिस मोहल्ले में निवास करते हैं उसके आसपास के 5 मोहल्लों में जप–यज्ञ कार्यक्रम प्रारम्भ करायें।

प्रत्येक जिले में न्यूनतम 10 हजार हिन्दू परिवार जप करें। एक परिवार में कितने भी व्यक्ति जप कर सकते हैं। पूज्य सन्तों की इच्छा यही है कि परिवार के सभी सदस्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम 13 माला अवश्य जपें। जप करने वाला परिवार या व्यक्ति अपने घर के ऊपर एक भगवा पताका फहराए। जपकर्ता व्यक्ति अपने हाथ में संकल्प सूत्र बाँधे।

जपकर्ता परिवार/मन्दिर/ सत्संग/विद्यालय अपनी जपसंख्या का विवरण कापी या डायरी में नोट करें।

15 वर्ष से 30 वर्ष आयुवर्ग तक के न्यूनतम एक करोड़ नवयुवकों को जप–यज्ञ के माध्यम से मन्दिर निर्माण कार्य में सहभागी बनाएँ। जप–यज्ञ कार्यक्रम में मातृशक्ति की भूमिका अत्यन्त प्रभावी होगी। मातृशक्ति, दुर्गावाहिनी, की बहनें घर–घर जप–यज्ञ करा सकती हैं। राष्ट्र सेविका समिति की शाखा अपने शाखाक्षेत्र से जुड़े 100 परिवारों तक जप–यज्ञ पहुंचा सकती हैं। एक जिले के 10,000 हिन्दू परिवारों में अर्थात् एक ग्रामीण जिले में 200 गाँव अर्थात् प्रत्येक प्रखण्ड में कम–से–कम 20 गाँव, प्रत्येक गाँव में 50

परिवारों से सम्पर्क करना। शहरी जिलों या क्षेत्रों में एक प्रखण्ड में एक हजार परिवार जप करें। नगर–गाँव के हर मोहल्ले में जप हो। मोहल्ले के लोग मन्दिर में एकत्र होकर सामूहिक जप कर सकते हैं। 47,000 ग्रामों में एकल योजना के अन्तर्गत कार्य है। अनेक ग्रामों में सत्संग हैं। सत्संग में न्यूनतम 25 व्यक्ति अवश्य आते होंगे। अतः एकल अभियान कार्यकर्ता एक लाख ग्रामों तक जप–यज्ञ को सम्पन्न कराने का संकल्प करें।

सभी कार्यकर्ता अपने–अपने क्षेत्र की संघ शाखाओं से सहभागिता के लिए निवेदन करें। एक प्रभात शाखा, साप्ताहिक मिलन और संघ मण्डली, अपने क्षेत्र के न्यूनतम 100 परिवारों में जप–यज्ञ का संकल्प कराने में सफल हो सकते हैं। अपने परिचय के विद्यालयों, मन्दिरों, धार्मिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक संस्थाओं में इस कार्यक्रम को पहुँचाएँ।

विद्यालयों में प्रातः प्रार्थना के समय प्रतिदिन एक माला (108 बार) विजय मन्त्र का जप करा सकते हैं। छात्रों से आग्रह किया जाए कि वे अपने घरों में नित्य 13 माला जप स्वयं करें तथा माता–पिता से भी जप करने का निवेदन करें।

जपकर्ता अपने सम्पर्क के कम–से–कम 11 परिवारों तक कार्यक्रम को पहुँचाने का प्रयास करें। मन्दिरों एवं विद्यालयों में बैनर टाँगे जा सकते हैं।

बैनर, पत्रक स्टीकर्स एवं पत्रकारवार्ताओं के माध्यम से कार्यक्रम को जन–जन तक पहुँचाएँ।

ग्रामीण क्षेत्रों में नवयुवकों की टोलियाँ, साइकिल–मोटर साइकिल से जिले का भ्रमण करके दीवार लेखन द्वारा जप–यज्ञ को जन–जन तक पहुँचाएँ। नगरों में प्रभातफेरियाँ निकालें। भजन मण्डलियों को प्रेरित करें।

जप–यज्ञ का उद्देश्य समाज को समझाने के लिए सन्तों के क्षेत्र निश्चित किए जाएँ। सन्त अपने भक्तों को जप–यज्ञ की प्रेरणा दें। तीर्थस्थानों पर जप–यज्ञ के आयोजन/अनुष्ठान हों। तीर्थपुरोहितों का सहयोग प्राप्त करें। अवकाश प्राप्त/वानप्रस्थी व्यक्ति पूर्णकालिक रूप में सक्रिय हों। 13 मई अक्षय तृतीया को जप–यज्ञ की पूर्णाहुति नगर, कस्बे के एक कोने के मन्दिर से दूसरे कोने के मन्दिर तक सामूहिक ''श्रीराम जय राम जय जय राम'' का संकीर्तन करते हुए की जा सकती है, जपकर्ता भगवान् के कार्य हेतु घर से निकलकर साथ–साथ मिलकर सड़क पर चलेगा। इस विराट स्वरूप को देखकर सज्जन शक्ति हर्षित होगी और आंदोलन की सफलता के प्रति जनमानस में आत्मविश्वास जगेगा और आन्दोलन अपने उद्देश्य की पूर्ति में एक कदम और आगे बढ़ेगा।

जप-यज्ञ के पूर्व लिया जानेवाला संकल्प

आज चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, गुरुवार, विक्रमी संवत् 2070 को पुण्य क्षेत्र (अपने जिले/नगर का नाम उच्चारण करें) के मन्दिर/स्थान पर मैं/हम (सभी अपना–अपना नाम व गोत्र का उच्चारण करें) भगवान् श्रीरामचन्द्र जी को साक्षी मानकर तथा पवित्र भगवा ध्वज की प्रतिष्ठा कर संकल्प करते हैं कि :–

क. अयोध्या में आज जहाँ रामलला विराजमान हैं, वह स्थान ही श्रीराम जन्मभूमि है। इस सत्य को हम साकार करेंगे।

ख. श्रीराम जन्मभूमि परिसर सहित उसके चारों ओर की सम्पूर्ण 70 एकड़ अधिगृहीत भूमि को श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर–निर्माण करने के लिए अब अविलम्ब संसद में निर्णय करवाकर हिन्दू समाज के सम्मान एवं भावना की रक्षा करेंगे।

ग. हम अयोध्या की सांस्कृतिक सीमा में कोई नई मस्जिद या इस्लामिक केन्द्र नहीं बनने देंगे।

घ. उपरोक्त लक्ष्य पूर्ण करने हेतु अजेय हिन्दू समाज की निर्मिति के लिए हम **चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से अक्षय तृतीया** तक किए जाने वाले विजय महामंत्र **''श्रीराम जय राम जय जय राम''** की प्रतिदिन न्यूनतम 13 माला जप करके 13 कोटि निर्धारित जप–यज्ञ में सहभागी बनेंगे।

श्रीराम जय राम जय जय राम
इति विजयमंत्रस्य 13 मालाजपम् अहं करिष्ये/वयं करिष्यामहे।

बीफ का बढ़ता निर्यात और दूध का संकट

भारत में बीफ का निर्यात जिस तरह से बेतहाशा बढ़ रहा है उसको समक्ष रखते हुए संयुक्त राष्ट संघ कृषि विभाग ने अपनी ताजा रिपोर्ट में चेतावनी दी है कि अगर निर्यात की यही गति रही तो अगले पांच वर्षों में भारत में दूध का भीषण संकट पैदा हो जाएगा। बच्चे एक–एक बूंद दूध के लिए तरसेंगे और देश को विदेशों से भारी मात्रा में मिल्क पाउडर एवं अन्य उत्पाद आयात करने होंगे। राष्ट्रीय मीडिया भले ही इस आने वाले संकट के बारे में मूक बना हुआ है मगर क्षेत्रीय समाचार पत्रों ने इस गंभीर समस्या की चर्चा जरूर शुरू कर दी है। देश के प्रमुख बीफ उत्पादन क्षेत्र उत्तर प्रदेश में किसानों ने इस आने वाले खतरे का अहसास होने के बाद से देश से बीफ के निर्यात को रोकने की मांग शुरू कर दी है। खास बात यह है कि मांग करने वाले संगठन **'बीफ निर्यात रोको'** के अधिकांश सदस्य मुसलमान, किसान एवं कसाई हैं। इस संगठन की ओर से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के दस जिलों में गत तीन महीने में जोरदार प्रदर्शन किए गए हैं और सरकार को बीफ के निर्यात पर तुरंत रोक लगाने के समर्थन में ज्ञापन भी दिए गए हैं। सहारनपुर जिला के इस संगठन के संयोजक मोहम्मद इरफान का कहना है कि यदि गौवंश और भैंसों के मांस का

> **"संयुक्त राष्ट्र संघ कृषि विभाग ने अपनी ताजा रिपोर्ट में चेतावनी दी है कि अगर बीफ निर्यात की यही गति रही तो अगले पांच वर्षों में भारत में दूध का भीषण संकट पैदा हो जाएगा।"**

निर्यात सरकार ने तुरंत नहीं रोका तो देश के लोगों को न तो खाने को गोश्त मिलेगा और न ही बच्चों को पीने के लिए दूध। बीफ के अंधाधुंध निर्यात से आने वाले कुछ वर्षों में देश में दुग्ध उत्पादन में भीषण संकट आने की संभावना है।

बड़ी अजीब बात है कि सरकार इस संकट के बारे में बेखबर बनी हुई है। योजना आयोग ने बारहवीं पंचवर्षीय योजना में 27 हजार करोड़ की लागत से देश में अति आधुनिक पशु वधशालाएं स्थापित करने का सुझाव दिया है। सरकारी सूत्रों के अनुसार भारत में डेढ़ सौ से अधिक माडर्न पशु वधशालाएं स्थापित करने के लिए बैंक 27 हजार करोड़ ऋण देने के लिए तैयार हैं। बड़ी शर्म की बात है कि विदेशी मुद्रा कमाने के लोभ में भारत सरकार संविधान की धज्जियां उड़ाते हुए गौवंश और भैंसों के मांस के निर्यात को बढ़ावा देने में पूरे जोर से जुटी हुई है। भारतीय संविधान के मार्गदर्शक निदेशों में सरकार का यह कर्त्तव्य बताया गया है कि वह दुधारू प्राणियों की नस्ल का संवर्द्धन करने का प्रयास करे। हाल में अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय की ओर से एक पुस्तिका प्रकाशित की गई, जिसमें स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए गौमांस के भक्षण की खुलेआम वकालत की गई है। जहां तक गौवंश और भैंसों के गोश्त के निर्यात का संबंध है उसके आंकड़े काफी चौंकाने वाले हैं। 2009 में भारत ने 6 लाख टन बीफ का निर्यात किया था जो कि 2010 में बढ़कर सवा सात लाख, 2011 में 12 लाख और 2012 में 15 लाख टन तक पहुंच गया। चालू वर्ष में इसके 21 लाख टन पहुंच जाने की संभावना है। बीफ के निर्यातक देशों में 2007 में भारत का स्थान 15वें नम्बर पर था जो कि 2009 में बढ़कर 5वें स्थान पर पहुंच गया। 2012 में भारत का स्थान दूसरा था और 2013 में भारत विश्व भर में सबसे ज्यादा बीफ निर्यातक देश बन गया है। परंपरागत रूप से आस्ट्रेलिया, ब्राजील और अमरीका कभी बीफ के मुख्य निर्यातक देश हुआ करते थे मगर उन्होंने पशुओं की घटती हुई संख्या को देखते हुए बीफ का निर्यात करना कम कर दिया है। भारत से बीफ के निर्यात में जो भारी वृद्धि हुई है उसका एक कारण यह भी है कि हलाल ढंग से प्राणियों का वध करने वाला भारत विश्व का एकमात्र देश है। यही कारण है कि विश्व भर के मुस्लिम देशों में भारतीय बीफ की मांग में बड़ी तेजी से वृद्धि हो रही है। इसके अतिरिक्त दक्षिणी एशियाई देशों में भी भारत बीफ का मुख्य निर्यातक देश बन गया है। उदाहरण के लिए मलेशिया में 2011 में जो बीफ का निर्यात हुआ उसमें भारत का हिस्सा 82 प्रतिशत था जबकि आस्ट्रेलिया का हिस्सा मात्र 13 प्रतिशत ही रह गया।

कभी इस देश के किसान गायें और भैंसें इसलिए पालते थे कि बैल और भैंसे हल चलाएंगे और बच्चों के लिए दूध भी प्राप्त होगा, मगर जब से विश्व बाजार में इन प्राणियों के मांस के दाम में भारी वृद्धि हुई है तब से किसानों का सारा जोर अपने प्राणी धन को कसाइयों के हाथ बेचने पर है। इसका नतीजा यह हुआ है कि गाएं और भैंस की देशी नस्लों का नामोनिशान मिटता जा रहा है।

सरकारी सूत्रों के अनुसार देश में डेढ़ लाख से अधिक पशु वधशालाए हैं जिनमें हर वर्ष 15 से 20 करोड़ बड़े प्राणी जैसे भैंस, भैंसे और कटड़े के अतिरिक्त गाय, बैल, बछड़े, बछड़ियां वध किए जाते हैं। इसमें से डेढ़ सौ के लगभग बड़ी पशु वधशालाएं भी हैं जिनकी क्षमता प्रतिदिन सात हजार प्राणियों का वध करने से लेकर 25 हजार प्राणी वध करने की है। देश में बीफ का कारोबार दस हजार करोड़ से लेकर 15 हजार करोड़ रुपए के बीच आंका गया है इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि आजादी के बाद बड़े प्राणियों के वध में बड़ी तेजी से वृद्धि हुई है। महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि यदि देश आजाद हुआ तो वे सबसे पहले गौवध पर पूर्ण प्रतिबंध लगाएंगे। आचार्य विनोबा ने गौवंश पर संपूर्ण प्रतिबंध लगाने के लिए आमरण अनशन तक किया था। खास बात यह है कि मुगल सम्राट बाबर ने अपने पुत्र हुमायूं को यह निर्देश दिया था कि हिन्दुओं की भावनाओं को देखते हुए देश भर में गौवध पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए। इस बात की पुष्टि बाबरनामा से की जा सकती है। अकबर महान ने भी गौवंश के वध पर प्रतिबंध को जारी रखा। अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर का एक फरमान आज भी लाल किला के संग्रहालय में देखा जा सकता है, जिसमें उन्होंने सारे देश में गौवध पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का हुक्म जारी किया था और यह घोषणा की थी कि गौ

का वध करने वाले को वही सजा दी जाएगी जो किसी इंसान के वध करने वाले को दी जाती है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि इस देश के 85 प्रतिशत हिन्दू गौ को माता का दर्जा देते हैं और उसके वध के खिलाफ हैं। पाठकों को याद होगा कि संत महात्माओं ने देश में गौवध पर प्रतिबंध लगाने के लिए तीन वर्ष तक निरंतर दिल्ली में सत्याग्रह किया था और 45 हजार लोग जेल गए थे। मगर इसके बावजूद राष्ट्रीय स्तर पर केन्द्र सरकार गौवध पर प्रतिबंध लगाने को तैयार नहीं है। इस समय देश के केवल दस राज्य ऐसे हैं जिनमें गौवध पर प्रतिबंध है। यह कड़वी सच्चाई है कि गौवंश पर जिन राज्यों में प्रतिबंध है वहां पर भी खुलेआम गौवंश का वध होता है। जहां तक भैंस की नस्ल का संबंध है, इसके वध पर देश के किसी भी राज्य में प्रतिबंध नहीं है। देश में गौशालाओं की हालत बेहद सोचनीय है। इनके लिए न तो सरकार के पास धन है और न ही बड़े–बड़े धनवान ही इस पुण्य कार्य के लिए दान देते हैं। नतीजा यह है कि इन गौशालाओं में जो वृद्ध गायें एवं बैल आदि भेजे जाते हैं उनमें से अधिकांश भूख–प्यास से तड़प–तड़पकर मर जाते हैं। देश में प्राणियों के वध पर प्रतिबंध लगाना धार्मिक दृष्टि से तो जरूरी है ही, आर्थिक कारणों से भी यह कम आवश्यक नहीं है। इस संबंध में जब भी देश में मांग उठती है तो छद्म सेकुलरवादी इसे नजर अंदाज कर देते हैं।

बीफ के निर्यात का एक पक्ष बेहद महत्वपूर्ण है। कभी इस देश के किसान गायें और भैसों को इसलिए पालते थे कि बैल और भैसे हल चलाएंगे और बच्चों के लिए दूध भी प्राप्त होगा मगर जब से विश्व बाजार में इन प्राणियों के मांस के दाम में भारी वृद्धि हुई है तब से किसानों का सारा जोर अपने पशु धन को कसाइयों के हाथ बेचने पर है। इसका नतीजा यह हुआ है कि गाएं और भैंस की देशी नस्लों का नामोनिशान मिटता जा रहा है। कभी मुर्रा भैंस की नस्ल हरियाणा की शान हुआ करती थी। इस नस्ल की भैंसें 35 से 40 किलो तक दूध दिया करती थीं। रोहतक इन भैंसों के व्यापार का मुख्य केंद्र होता था। अन्य प्रदेशों के व्यापारी इन भैंसों को भारी दामों पर खरीदकर ले जाते थे मगर जब ये भैसें दूध देना बंद कर देतीं तो इन्हें कसाइयों के हाथ बेच देते थे। आज हरियाणा में मुर्रा नस्ल की भैंस ढूंढ़ने से भी नहीं मिलती। यही स्थिति देशी गायों की नस्लों की भी है। शाहीवाल, लाल सिंधी, गीर, राठी, थारपारकर, कांकरेज एवं हरियाणा नस्ल की गायें दूध और मजबूत बैलों के लिए विश्वविख्यात थीं। धीरे–धीरे ये नस्लें कसाइयों की छुरियों की भेंट चढ़ती जा रही हैं। भारतीय कृषि वैज्ञानिकों ने अपनी देशी नस्लों को सुधारने का आज तक कोई प्रयास नहीं किया। उनका सारा जोर विदेशों से होलिस्टन और जर्सी नस्ल की गाय मंगवाने पर रहा है। इस नस्ल की गाएं दूध तो जरूर ज्यादा देती हैं मगर वह भारतीय जलवायु को सहन नहीं कर पाती और एक–डेढ़ वर्ष के भीतर ही मर जाती हैं। इन विदेशी नस्लों का एक दोष यह भी है कि इनके बैल हलों में नहीं जोते जा सकते। विदेशी नस्लों के बैलों के वीर्य से देशी नस्लों की गायों के कृत्रिम गर्भाधान का जो कार्यक्रम चलाया गया था वह पूर्णतः विफल रहा है। हमारा पशुधन नेस्तनाबूद हो रहा है मगर इसकी चिंता किसी को नहीं है।

गाय और गुरुजी

हिंदुत्ववादी हमारा प्रतिनिधित्व करें

परमपूज्य गोलवलकरजी (गुरुजी) द्वारा 10 अप्रैल 1954 को मा. फिरोजशाह डी. पटेल जी को लिखा गया पत्र यहां प्रस्तुत है-

गोमाता के प्रति आपके श्रद्धायुक्त शुद्ध भाव जानकर हृदय पुलकित हुआ। ऐसी ही सब लोगों के मन में तीव्र भावना रही तो शीघ्र ही गोहत्याबंदी का कानून बनेगा। यह सत्य है कि शासन चलाने वाले लोग यह सोचते हैं कि हिंदूविरोधी अर्थात् राष्ट्रविरोधी मुसलमान और तत्सम मानसिकता वाले लोगों के वोटों से अगले चुनाव में निर्वाचित होकर अपना सत्तास्थान भविष्य में बहुत समय तक कायम रहेगा। मुझे लगता है कि सभी सत्प्रवृत्त राष्ट्रभक्त इन सत्ताधारी लोगों को केवल मुसलमानों की संगत में ही छोड़ दें और जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप शासन चलाने वाले जनप्रतिनिधियों को अन्यत्र खोजें।

सत्याग्रह कुचलने के लिए शासन द्वारा असभ्य पद्धति का सहारा लेना दुर्भाग्यपूर्ण है। अपनी संस्कृति, संस्कार तथा गुणों के अनुसार ही व्यक्ति का व्यवहार होता है। अतः शासन से इसके विपरीत अपेक्षा करनी ही नहीं चाहिए। दमन नीति के रहते हुए भी यह आंदोलन प्रभावी बन रहा है। लोग सजग हैं और मुझे लगता है कि यह आंदोलन दिन–प्रतिदिन तीव्र होगा। कुछ समय भले ही लगे, किंतु यह आंदोलन यशस्वी होगा, ऐसा मुझे विश्वास है। गोमाता के विषय में आपकी उदात्त कल्पनाओं के लिए कृतज्ञ हूँ।

तुच्छ डालर का पागलपन

श्रद्धा को सब प्रकार से मिटट्ी में मिलाकर राष्ट्र–जीवन का उपमर्द कर इस घृणास्पद व्यापार से मिलने वाले डालर के ऊपर थूकना भी महापाप है, ऐसा मैं समझता हूँ। स्पर्श करना तो दूर की बात है। इतना भीषण पैसा जो संपूर्ण राष्ट्रजीवन को बर्बाद करेगा। चोरी से लाया हुआ द्रव्य या भिन्न–भिन्न प्रकार के पाप–कर्मों से प्राप्त किया हुआ द्रव्य किसी परिवार या राष्ट्र की उन्नति नहीं कर सकता। गौ की हत्या कर उसके व्यापार से मिला हुआ यह डालर भारत को मिटट्ी में मिलाकर इतना नीचे गाड़ देगा कि यदि परमात्मा भी उसको उठाने के लिए आए तो कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। अतः कुछ डालर भले ही कम मिलें, पर इसका मोह छोड़ना ही चाहिए।

प्रस्तुति- खेमचंद शर्मा

'राम रहीम' और 'गरीब नवाज'

अपना भारत एक विचित्र देश है। यहां सैकड़ों गायें प्रतिदिन कटती भी हैं और सैकड़ों गोमाताओं को बचाने के लिए हिन्दू और मुस्लिम साथ–साथ अपना योगदान देने में भी पीछे नहीं रहते हैं। आज सारे देश में मुस्लिमों द्वारा चलाई जाने वाली गोशालाओं की संख्या 150 से कम नहीं है। समय–समय पर पाठकों के सम्मुख मुस्लिमों द्वारा चलाई जा रही गोशालाओं का विवरण यह लेखक प्रस्तुत करता रहा है।

पिछले दिनों एक व्याख्यानमाला के निमित्त इस लेखक को मालवा के प्रसिद्ध नगर आगर जाने का अवसर मिला। वहां की गोशाला के संबंध में पूछताछ की तो श्री मालानी एवं परमार जी ने एक गोरेचिट्टे युवक की ओर इशारा किया, जिसका नाम श्री राजेश देसाई है। अब तक तो आगर के इतिहास पर चर्चा हो रही थी। लेकिन गोशाला के नाम पर श्री देसाई ने अपना मौन तोड़ा और कहा हमें इस बात पर गर्व है कि हमारे परिसर में दो गोशालाएं ऐसी हैं, जिन्हें मुस्लिम बंधु संचालित करते हैं। उन्होंने राजगढ़ जिले के मुल्लाखेड़ी नामक गांव में चल रही गोशाला की चर्चा की जिसका नाम है **'गरीब नवाज गोशाला'।** पाठकों को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि अजमेर के ख्वाजा को गरीब नवाज कहकर पुकारा जाता है।

मुल्लाखेड़ी (म.प्र.) स्थित 'गरीब नवाज़' गोशाला का एक दृश्य

शाजापुर के प्रसिद्ध वकील श्री कृष्णकुमार कराडा एवं उनके अन्य साथियों के साथ जब मैं मुल्लाखेड़ी पहुंचा तो थोड़ी दूरी पर ही एक अधेड़ और छरहरे बदन के व्यक्ति को देखा, जो सर्दी से कांप रहा था। वकील साहब ने नाम से पुकारा रमजान भाई कैसे हैं? वे मुझे अचरज से देख रहे थे। जब मैंने पूछा सर्दी में ओढ़ने के लिए कुछ नहीं है, तो वे कहने लगे एक चादर थी जो बछिया को ओढ़ा दी। अभी छोटी है इसलिए उसकी चिंता करनी पड़ती है.....। घर के निकट पहुंचे तो खूबसूरत श्वेत धवल, लेकिन मुंह के पास ललाई वाली बछिया खड़ी थी। रमजान भाई को चाटने लगी, वे उसके चेहरे को सहलाते भी रहे और बातें भी करते रहे। मैंने पूछा–गोशाला कितने वर्षों से चलाते हो? कहने लगे याद नहीं, यह तो पिताजी के समय से चली आ रही है। इसका नाम गरीब नवाज क्यों रखा? तो कहने लगे अजमेर वाले ख्वाजा मुझे पालते हैं और मैं उनकी गायों को पालता हूं। गायों की संख्या 113 बताई। कहने लगे अभी तो जंगल चरने चली गई हैं। गायों के लिए हरी घास मिलती है तो बड़ी खुशी होती है, लेकिन गर्मी में बड़ा कष्ट होता है। तब क्या करते हो? वकील साहब हमारी चिंता करते हैं और राजेश जी तो इन सबके पिता

समान हैं। हमारे से अधिक चिन्ता उन्हें रहती है, जिस वस्तु की आवश्यकता होती है वे कहीं न कहीं से हमें लाकर दे देते हैं। चारा, खली और लावसी (गुड़ में पकाए हुए चावल) मिल जाए तो फिर क्या कहना? कमी तो हर चीज की रहती है लेकिन यहां के गोभक्त हमें कष्ट नहीं होने देते हैं। अब तो मध्य प्रदेश सरकार भी हमें अनुदान देने लगी है। बहुत थोड़ा ही सही लेकिन शिवराज सिंह की सरकार ने इन मूक प्राणियों की ओर जो ध्यान दिया है उसके लिए हम उनके शुक्रगुजार हैं। रमजान भाई आगे क्या योजना है? गायों की संख्या बढ़ जाए और उनकी सेवा करता रहूं। हमारी तीन पीढ़ियों से यह गोशाला चल रही है। भविष्य में भी चले, यह ख्वाजा साहब से हमारी प्रार्थना है। जब मैंने कहा विश्वास रखो अब इस देश में गाय और गोशाला का भविष्य उज्ज्वल है तो रमजान की आंखों में चमक लौट आई।

बछड़े की स्मरण–शक्ति

आगर में ही एक पुराना शासकीय पशु प्रजनन केन्द्र भी है। यहां डॉ. अरविन्द महाजन अपनी सेवाएं दे रहे हैं। गाय के अनेक गुणों का वर्णन करते–करते जब उनके दूध निकालने का समय आया तो डॉ. अरविन्द ने कहा गाय और उसके बछड़े की स्मरण शक्ति का आपको एक नमूना दिखाता हूं। गायों का दूध बारी–बारी से निकाला जा रहा था। इन गायों के नाम दिए गए थे, जैसे–प्रीती, लक्ष्मी, गोमती, बबली, मीना, शर्मीला आदि। गाय के इन बछड़ों को अपनी मां के नाम भली प्रकार से याद थे। दूध निकालने से पहले बछड़ों का टोला जहां खड़ा था, वहां जाकर उनकी मां का नाम पुकारा जाता था। बछड़ा अपनी मां का नाम सुनते ही भागता और उसके थन को मुंह में ले लेता। यदि भूल से भी किसी अन्य बछड़े को वहां ले जाया जाता तो न मां दूध पिलाती थी और न ही उसका बछड़ा दूध पीता था। उक्त दृश्य सामान्य व्यक्ति को दंग कर देने वाला था।

यही मेरा परिवार

शाजापुर से लगता हुआ ही मध्य प्रदेश का राजगढ़ जिला है। यहां जो मुस्लिम बंधु गोशाला चलाते हैं उनका नाम करीम पटेल है। गोशाला जहां स्थित है उस गांव का नाम पालेन है। पाठकों को यह याद दिला दें कि स्वतंत्रता के पूर्व मालवा का यह परिसर ग्वालियर के सिंधिया परिवार के अंतर्गत आता था। इस गोशाला का नाम है **राम–रहीम गोशाला।** इस नाम के पीछे यह तर्क दिया जाता है कि यहां की जनता में मजहब के नाम पर कोई मतभेद नहीं है। हिन्दू और मुस्लिम गोमाता की सेवा राम और रहीम बनकर करते हैं।

राजेश भाई का कहना था कि इस गोशाला की एक बड़ी विशेषता है, वह है इसके परिसर में गोदान की परम्परा। हर साल औसतन एक हजार गायों का दान किया जाता है। कोई सम्पन्न व्यक्ति किसी गरीब–आदमी को गाय देकर उसकी अर्थव्यवस्था में सहायक होता है। गाय और बैल यहां की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। लेकिन हम किसी अन्य के हाथों इनका दान नहीं करते हैं, क्योंकि अपरिचित गोमाता के साथ किसी और प्रकार का व्यवहार भी कर सकता है? दान की हुई गाय नजरों के सामने रहनी चाहिए। भाई द्वारा बहन को गोदान करने की परम्परा है। विवाह में भी गाय को भेंट स्वरूप दिया जाता है। जब गोदान का औसतन आंकड़ा पूछा तो राजेश भाई कहने लगे हिन्दू परिवारों में एक हजार और मुस्लिम परिवारों में कम–से–कम 50 गायों का दान होता है। यहां की ग्रामीण जनता का गोप्रेम आश्चर्यजनक है। करीम भाई से पूछा गया कि आपके परिवार में और कौन–कौन है? उन्होंने अपनी गोशाला की ओर इशारा करते हुए कहा यही मेरा परिवार है.....मुझे इस पर गर्व है कि मेरे गायों, बैलों और बछड़ों का कुनबा राम रहीम का कुनबा है। वर्षों से हम इनकी सेवा करते हैं और ये हमारी सेवा करते हैं। रमजान खान और करीम पटेल दोनों का कहना था कि अभाव तो अनेक हैं, लेकिन हमारा भाव एक है और वह है– हमारी इस माता के लिए अर्पण और समर्पण।

अपना भारत एक विचित्र देश है। यहां सैकड़ों गायें प्रतिदिन कटती भी हैं और सैकड़ों गोमाताओं को बचाने के लिए हिन्दू और मुस्लिम साथ-साथ अपना योगदान देने में भी पीछे नहीं रहते हैं। आज सारे देश में मुस्लिमों द्वारा चलाई जाने वाली गोशालाओं की संख्या 150 से कम नहीं है।

स्वावलम्बन में भारतीय गाय की भूमिका

आदिकाल से भारतीय संस्कृति में भारतीय गाय का स्थान सर्वोपरि रहा है। सामाजिक योगदान के कारण गोवंश को वेद–उपनिषदों तक में विशिष्ट स्थान मिला है। लोकाचार में गाय को उसके महत्वपूर्ण योगदान को स्वीकार कर माता के सर्वश्रेष्ठ अलंकरण से विभूषित किया गया। गाय समाज की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सब कुछ सुलभ कराने में सक्षम है, इसीलिये गाय को कामधेनु की संज्ञा मिली है।

उपरोक्त अलंकरण एवं सम्मान भारतीय गाय को किसी की दया से नहीं मिले, वरन् अपनी श्रेष्ठतम् गुणवत्ता की सिद्धता से प्राप्त हुये हैं। इसी लिये गोवंश एवं मानव का साहचर्य अटूट बन गया। भारतीय गायों द्वारा प्रदत्त उपहारों ने भारतीय समाज को ऋणी बना दिया और इसी कारण समाज गाय की पूजा करने लगा। यह व्यवस्था हजारों–हजार वर्षों तक समाज को स्वस्थ–स्वावलम्बी एवं स्वाभिमानमय जीवन जीने का साधन बन सकी। गाय के दूध को अमृत की संज्ञा प्राप्त है; क्योंकि गाय के दूध में बुद्धिवर्धक सेरीब्रोसाइड तत्व भरपूर मात्रा में होता है। गाय के दूध का रंग पीला जैव रसायन कैरोटीनाइड्स के कारण होता है जो कि अम्ल पित्त, अल्सर, दाह आदि के लिये उपयोगी होता है। आर्थिक दृष्टि से गोदुग्ध उत्पादन भैंस की तुलना में सस्ता पड़ता है, क्योंकि गाय कम खाकर भी अधिक दूध देने की क्षमता रखती है। साथ–ही–साथ गोदुग्ध में मानव पोषण तत्व संतुलित मात्रा में पाये जाते हैं, इसीलिये गाय के दूध को पूर्ण भोजन भी माना जाता है। गोदधि में पाये जाने वाले सूक्ष्म जीवाणु आंतों में हानिकारक विषाणुओं की उत्पत्ति को रोककर मित्र जीवाणुओं की वृद्धि को प्रोत्साहित करते हैं। गाय का घी–नेत्र रोगों के लिये उपयोगी है। गोघृत के सेवन से मेधा शक्ति, स्मरण शक्ति, सौंदर्य कान्ति बढ़ती है।

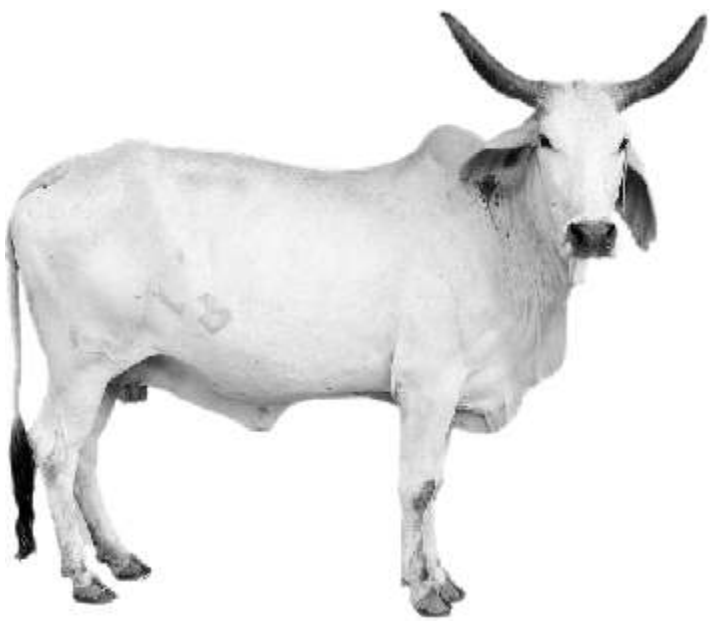

गाय के गोबर में एन्टी बायोटिक, एन्टी रेडियोएक्टिव तथा एन्टी थर्मल गुण होते हैं। यह गुणवत्ता वर्तमान में वैज्ञानिकों द्वारा भी सिद्ध की जा चुकी है। समाज की अंगीकृत व्यवस्था में गाय के गोबर से घर–आंगन के लेपन की व्यवस्था इन्हीं गुणों के कारण नियोजित थी। धार्मिक अनुष्ठानों में भी पंचगव्य की अनिवार्यता इन्हीं विज्ञान प्रमाणित

गुणों के आधार पर सुनिश्चित की गयी थी जो आज तक विद्यमान है।

भारत कृषि प्रधान राष्ट्र होने के कारण 70 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से कृषि एवं पशुपालन में अपनी आजीविका तलाशती है। चूंकि कृषि एवं पशुपालन की निर्भरता मत्स्य एवं जल की भांति है अर्थात् खेती को पशुपालन से और पशुपालन को कृषि से अलग करना सम्भव हो ही नहीं सकता। यह भी सर्वविदित है कि स्वस्थ कृषि से ही स्वस्थ समाज की कल्पना सम्भव है और इस कल्पना का साकार स्वरुप हमारे इतिहास ने देखा है। "आजीवन स्वास्थ्य का प्रथम पायदान तो स्वस्थ आहार ही है–अर्थात जैविक खेती से उत्पन्न विषमुक्त जैविक आहार।" वैसे जैविक खेती को परम्परागत खेती भी माना जा सकता है–क्योंकि गाय–गोबर आधारित जैविक खाद बनाने के परम्परागत कारखाने घर–घर में आदिकाल से लगे हुये थे और इन्हीं परम्परागत जैविक खाद कारखानों से उत्पन्न खाद से कृषक की आत्मनिर्भरता रहती थी। वर्तमान में अधिकाधिक फसलोत्पादन की अनिवार्यता के लिये अधिक पैदावार देने में सक्षम प्रजातियों की उपलब्धता सुगम है, किन्तु इनके सफल उत्पादन के लिये अधिक पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। अर्थात जैविक खादों द्वारा अधिकतम् पोषक तत्वों की आपूर्ति करना एक बड़ी चुनौती थी। किन्तु वर्तमान में वैज्ञानिकों एवं कृषकों के सतत प्रयास से कम गोबर से कम समय में अधिकतम् खाद बनाने की विविध विधियां विकसित हो चुकी हैं। "उदाहरणार्थ एक किलो ग्राम गोबर, 15 किलो ग्राम बायोमास तथा इतनी ही मिट्टी से लगभग 30 किलो ग्राम कम्पोस्ट खाद तैयार हो जाता है।" केंचुआ खाद, नैडेप, तरल खाद आदि जैविक खाद बनाकर खेती को टिकाऊ स्वरुप दिया जा सकता है; क्योंकि एक गाय 10–12 किलो गोबर तथा इतना ही गोमूत्र प्रतिदिन विसर्जित करती है। एक गाय के जीवन काल में विसर्जित गोबर से 4500 लीटर बायोगैस तैयार होती है जो 80 टन लकड़ी के बराबर ऊर्जा प्रदान करती है, अर्थात सैकड़ों वृक्षों को भी जीवन दान दिया जा सकता है। वर्तमान में खेती में कीट–व्याधियों का प्रकोप इतना अधिक हो गया है कि कृषकों को फसल बीमा कराने की सलाह सरकार देने को विवश हो गयी है। राष्ट्रीय कृषक आयोग, जिसके अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कृषि वैज्ञानिक हैं, ने बताया है कि देश के 40 प्रतिशत किसान खेती से निराश होकर खेती के परम्परागत व्यवसाय को छोड़ने को तैयार हैं। महाराष्ट्र में तो कीट–व्याधियों के कारण नष्ट हुई कपास की फसलों के कारण कृषक आत्महत्या करने को विवश हो रहे हैं और आधुनिक तंत्र इस दुर्भाग्यपूर्ण प्रचलन को बढ़ते हुये देख मात्र रहा है, तभी तो आधुनिक तंत्र में परम्परागत विधाओं को न्यून स्थान ही मिल पा रहा है। अन्यथा जैविक खेती को प्रोत्साहन कर, गोमूत्र आधारित कीट रोधकों का उपयोग कर खेती को खुशहाल बनाया जा सकता है और इसके अनेक प्रयोग व्यावहारिक कसौटी पर खरे उतरे हैं। कीटनाशकों के दुष्परिणामों का अन्त यहीं नहीं होता, क्योंकि कीमती कीटनाशकों के क्रय के लिये कृषक कर्जदार भी बनता है और इसके प्रयोग से भूमिवासी कृषक मित्र कीट भी जीवित नहीं रह पाते। वायु, भूमिजल फसलोत्पाद आदि सभी तो विषाक्त होते जा रहे हैं। इन विषम परिस्थितियों का यदि एक ही समाधान खोजना है तो वह है जैविक खेती, अर्थात गो आधारित खेती, अर्थात गाय इस विश्वव्यापी संकट को हल करने में भी सक्षम है। इंटरनेशनल असिसमेंट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंस एंड "टैक्नोलॉजी फॉर डवलपमेंट में 40 देशों के 1000 विशेषज्ञों ने अपनी 400 पृष्ठों की अनुसंधान रिपोर्ट से निष्कर्ष निकाला है कि भविष्य सीमांत खेती एवं प्राकृतिक संसाधनों का ही है।"

> **"भारतीय गायों द्वारा प्रदत्त उपहारों ने भारतीय समाज को ऋणी बना दिया और इसी कारण समाज गाय की पूजा करने लगा। यह व्यवस्था हजारों-हजार वर्षों तक समाज को स्वस्थ-स्वावलम्बी एवं स्वाभिमानपूर्ण जीवन जीने का साधन बन सकी।"**

भारतीय गोवंश ने सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति के लिये स्वयं को अनुकूलन विविधता पुंज के रूप में विकसित किया है। भारतीय गोवंश की जैव विविधता की तुलना अन्यत्र कहीं नहीं पायी जाती,

किन्तु यहां तो दुग्ध उत्पादन में विशेष योगदान करने वाली, दुग्ध प्रधान गायें जैसे साहीवाल, गीर, लाल सिंधी जैसी नस्लें उपलब्ध हैं जो प्रकृति के अनुकूल सामंजस्य बैठाने में भी सक्षम हैं, वहीं कृषि एवं परिवहन के लिये उपयुक्त जैसे नागौरी, खिल्लार, मालवी नस्लें प्रचुरता में उपलब्ध हैं। प्राकृतिक धरोहर के रुप में द्विगुण सम्पन्न गोनस्लें जैसे हरियाणा, कॉकरेज आदि भी अपने यहां सुगमता से मिल जाती हैं। भारतीय गाय का समाज के प्रति योगदान की पूर्णता मात्र दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र की प्रदायता से नहीं होती, क्योंकि कृषक के सहकर्मी बलिष्ठ बैल भी इसी गोमाता ने अपने पुत्र के रूप में अपने ही भरत पुत्रों को दिये हैं। आज भी अपने देश में 57 प्रतिशत खेती बैलों से होती है। बैल कृषि के प्रत्येक कार्य को सहजता से करने में सक्षम है। बैलों के रख–रखाव पर न तो विदेशी मुद्रा व्यय होती है, जिस प्रकार ट्रैक्टर के संचालन हेतु पैट्रोलियम उत्पादों को क्रय करने के लिये। ट्रैक्टर का उपयोग तो भारतीय कृषि के लिये किसी भी परिदृश्य में व्यावहारिक नहीं है, क्योंकि 78 प्रतिशत कृषि तो सीमांत या छोटे कृषकों के पास है जिनकी जोत का आकार 2 हेक्टेयर या इससे भी कम है। आदिकाल से ही बैल समाज का अभिन्न अंग रहा है, तभी तो वेद में वर्णन है कि **"भभुम कीनाशा अभियन्तु वाहैः"** अर्थात उत्तम भारवाही नस्ल के बैलों द्वारा उपयुक्त कृषि यंत्रों के प्रयोग से कृषक को सुख पहुंचता है। आज–कल मोबाइल सर्वसुलभ एवं सर्वोपयोगी बन गया है, किन्तु दूरदराज के क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति नहीं होने के कारण मोबाइल चार्जिंग की समस्या बनी हुई है। अन्य छोटे–छोटे विद्युत आधारित उपकरणों का भी समाज को लाभ नहीं मिल पा रहा है, किन्तु साधारण उपकरणों द्वारा बैलों के सहयोग से बैटरी चार्ज की जा सकती है और इससे दूरदर्शन आदि को सर्वसुलभ बनाया गया है। गोमूत्र से घड़ी का संचालन करना तो आम बात हो गयी है, अब तो छोटे–छोटे बल्बों से अंधेरा भी दूर भाग रहा है। आटा चक्की एवं चारा काटने की मशीनों का संचालन भी बैलों द्वारा छोटे–से उपकरण के सहयोग से होने लगा है।

व्यक्ति की भाग–दौड़ की व्यस्ततम् तनावपूर्ण जिन्दगी भी देशी गाय के ऊपर मात्र हाथ फेरने से ही तनावमुक्त हो जाती है या फिर पंचगव्य उत्पादों के उपयोग से लाइलाज बीमारियों से भी छुटकारा मिलने लगा है। यह भी अनुभव में आ गया है कि दूध देने व न देने की स्थिति में भी गाय जीवित रहते हुये भी या फिर मरणोपरान्त भी समाजोपयोगी है। कुल मिलाकर यह सिद्ध हो चुका है कि गाय मानव स्वास्थ्य के लिये अमृततुल्य दुग्ध प्रदान करती है तो भूमि के स्वास्थ्य के लिये अमृततुल्य जैविक खाद। पौधों को कीट–व्याधियों से बचाने के लिये कीटनिरोधक भी गोमूत्र से तैयार किये जाते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिये दुधारु देशी गायों जैसे साहीवाल, गीर आदि के पालन से डेरी उद्योग चलाना आसान कार्य है, क्योंकि भारतीय गोवंश का पालन सुगमता से हो जाता है। आवागमन के लिये सुदृढ़ बैल भी भारतीय गोवंश से मिलते हैं जो ट्रैक्टर एवं पेट्रोलियम पदार्थों की निर्भरता से मुक्त कृषि कार्यों के लिये उपयोगी होते हैं। दूसरे शब्दों में प्रचलित अनेक समस्याओं का एक ही सुलभ समाधान गाय में ही निहित है।

चित्रकूट में उपेक्षित गोवंश भी अपेक्षित गोवंश

गोवंश की बहुआयामी उपयोगिता होते हुये भी वर्तमान में मात्र दूध ही ऑकलन का दोषयुक्त आधार बन कर रह गया है, इससे गोवंश की नस्लों एवं संख्या में निरंतर गिरावट हो रही है, बेरोजगारी बढ़ती जा रही है, भूमि में जीवाश्म स्तर गिरता जा रहा है, कृषि अलाभकर बनती जा रही है, भूमिजल स्तर घट रहा है। रासायनिक खेती की निर्भरता बढ़ने से खाद्य पदार्थ विषैले हो रहे हैं।

उक्त परिदृश्य में दीनदयाल शोध संस्थान ने 1993 में गोवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की। इस केन्द्र द्वारा भारत में ही विलुप्त हो रहे भारतीय गोवंश का संरक्षण किया जा रहा है। वर्तमान में साहीवाल, राठी, लाल सिंधी, गीर, हरियाणा, कॉकरेज, अंगोल, थारपारकर, नागौरी, मालवी, खिल्लार एवं बेचूर नस्लों का सफलतापूर्वक वैज्ञानिक विधि से संरक्षण किया जा रहा है। स्थानीय अल्प उत्पादक गोवंश की उत्पादकता बढ़ाने हेतु उच्च क्षमता सम्पन्न सांड़ क्षेत्र में उपलब्ध कराये गये हैं। कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा भी पशु पालकों के द्वार पर उपलब्ध कराने के सार्थक परिणाम आ रहे हैं। इन प्रयासों से उत्पन्न संतति अपनी मां से तीन–चार गुना अधिक दूध दे रही हैं और इस संतति का घर पर बांध कर ही पालन किया जाने लगा है, इससे जैविक खाद उत्पादन को प्रोत्साहन मिला है। पशुपालक केन्द्र पर जैविक खाद उत्पादन की संचालित विभिन्न प्रदर्शित इकाइयों से प्रोत्साहित होकर रासायनिक खाद से दूर जाने लगे हैं। केन्द्र पर संचालित बायोगैस संयंत्र भी अपनी सफलता का यशगान करता ही है।

"समाज में समरसता आयेगी तो हमारी प्रकृति में, व्यवहार में, सोच में सात्विकता आयेगी और हमारा मन गाय जैसा होगा। गाय के प्रति श्रद्धा बढ़ेगी तो सभी गोवंश की रक्षा करेंगे।"

गोमाता की रक्षा एवं सामाजिक समरसता ही परम धर्म

अपना परमवैभवशाली देश मुट्ठीभर विदेशी आक्रान्ताओं ने गुलाम बना दिया। वे विदेशी आक्रान्ता बुद्धिमान अथवा शक्तिशाली नहीं थे, परन्तु अपने देश में ही संगठन की कमी थी, स्वार्थीपन था। इसीलिए इस कमी को दूर करने के लिए समाज में समरसता नितान्त आवश्यक है।

अपने समाज में अभी भी कुछ छुआछूत दिखाई पड़ती है, उसके लिए यह आवश्यक है कि हमारे हरिजन–बाल्मीकि बन्धु जो सफाई कार्य करते हैं, वे अपने में थोड़ा परिवर्तन करें। वह परिवर्तन इस रुप में कि सफाई कार्य करते समय एक प्रकार के वस्त्र पहनें और सफाई के पश्चात दूसरे वस्त्र पहनें। तो सफाई के समय की जो गंदगी है वह नहीं रहेगी। छुआछूत अपने आप मिट जायेगी। जैसे वाटा कम्पनी में अच्छे लोग चमड़े का काम करते हैं, काम के बाद नहा–धोकर दूसरे वस्त्र पहनकर घर लौटते हैं। कोई भी घृणा नहीं करता। हमारे डॉक्टर्स गंदे से गंदे रोगी का उपचार करते हैं, मुर्दों की चीड़फाड़ करते हैं तो उस समय वे अस्पताल का चोला (Apron) पहनते हैं। उसके पश्चात साफ होकर दूसरे वस्त्र पहनकर घर आते हैं। इसके साथ ही आर्थिक उत्थान आवश्यक है। तभी तो अलग–अलग स्थिति में हो पायेंगे। आर्थिक उत्थान के लिए अच्छी आय होना आवश्यक है ही, उससे भी ज्यादा जरूरी दुर्व्यसना का त्याग है। आज अनेक बन्धुओं की हालत दुर्व्यसनों ने खराब कर रखी है। इन सुधारों को अपनायें तो समरसता अपने आप आयेगी। समरसता के लिए अपने तथाकथित सवर्ण समाज को भी आगे आना होगा। उन्हें अपने चिंतन में बदलाव करना होगा। वह बदलाव इस रूप में कि हम अपने स्वार्थवश किसी भी छोटे वर्ग के अधिकारी को सम्मान देते हैं, अतः इस व्यवहार को सभी के लिए अपनायें तो समरसता अपने आप आयेगी।

समाज में समरसता आयेगी तो हमारी प्रकृति में, व्यवहार में, सोच में सात्विकता आयेगी और हमारा मन गाय जैसा होगा। गोवंश के प्रति श्रद्धा बढ़ेगी तो सभी गोवंश की रक्षा करेंगे। गोमाता सर्व सुख प्रदान करेगी तब समाज की समरसता एवं गोमाता की रक्षा ही हमारा परमधर्म बन जायेगा।

भाग-6

दिनचर्या-ऋतुचर्या भोजनोपरांत क्या करें-क्या नहीं

हमारी आयु 'सुखायु' हो इस हेतु हमारे ऋषिमुनियों ने अति सूक्ष्मता से मार्गदर्शन किया है। इसी का एक उदाहरण है भोजनोपरांत हमें क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये– इसका विचार।

ग्रीष्म ऋतु छोड़ कर अन्य किसी भी ऋतु में दोपहर के भोजन के तत्काल बाद सोना नही चाहिये। ऐसा करने से कफ बढ़ता है, पेट भारी लगता है परंतु थोड़ा आराम करना चाहिये। यह आराम करते समय आठ श्वास लेने तक सीधा, इसके बाद 16 श्वास लेने तक दाहिनी कुक्षी पर तथा उसके बाद 32 श्वास लेने तक वाम (बायी) कुक्षी पर लेटें। इसके बाद जिसे जिस प्रकार कार्य करना है, सोना हो (शास्त्रानुसार) वैसा करें। छोटे बालक, बीमार व्यक्ति और वृद्ध व्यक्ति को अन्य ऋतुओं में भी सोने में कोई हर्ज नहीं।

हम सोते समय किस प्रकार की शय्या का उपयोग कर रहे हैं उनके गुणों का वर्णन बताये गये हैं। प्राचीन समय में अथवा आज भी गाँवों में खाट का उपयोग किया जाता है। खाट पर सोना तीनों दोषों को शांत करने वाला बताया गया है। पलंग पर गादी बिछाकर सोने से वात और कफ के विकार से अपना शरीर बचाया जा सकता है। जमीन पर सोने से शरीर पुष्टि और वीर्य वृद्धि होती है (पूर्व में जमीन से तात्पर्य मिट्टी और गोबर से लिपी जमीन से था। आज के समान ठंडी फरसी और टाइल्स से नहीं)। **''काष्ट पट्टीतु वात ला''** अर्थात् लकड़ी की पट्टी पर सोने से वायु वृद्धि होती है, इसका स्पष्ट वर्णन है।

भाग दौड़ से घर आने पर स्वच्छ प्रसन्नता महसूस कराने वाला पलंग जैसे मन को शांति देता है उसी तरह उत्तम शैय्या का प्रभाव यह शरीर को पुष्टिकर निद्रा और धैर्य देने वाला होता है। इतना ही नहीं उत्तम शैय्या श्रमहारक एवं वीर्य वृद्धि कारक होती है। इन सबके विपरीत खराब शय्या के गुण समझें, ऐसा शास्त्र वचन है।

खूब थककर आने पर यदि कोई शरीर के अंगों को दाब देता है तो हमारी थकान दूर हो जाती है और यदि शरीर में दर्द हो तो आराम महसूस होने लगता है। शरीर दबाने से वहाँ प्राणवायु युक्त रक्त अधिक प्रवाहित होकर हमारी थकान दूर हो जाती है। नींद आने लगती है। शरीर प्रसन्न होता है और वीर्य वृद्धि होती है।

जो व्यक्ति सुबह जल्दी उठते हैं वे दोपहर में नींद आवश्यक लगने पर भोजन के पूर्व या भोजन के 2–3 घंटे के बाद सोयें तो कोई हानि नहीं। भोजन के पूर्व सोने से भूख बढ़ती है और पत्थर भी पचाया जा सकता है, ऐसा शास्त्र मत है।

प्रतिदिन व्यायाम करने वाले, रात्रि में स्त्रीसुख पाने वाले, पर्याप्त पैदल चलकर आने वाले, घोड़ा इत्यादि सवारी कर थके हुये, पतले दस्त, किसी भी वेदना से पीड़ित, श्वास, प्यासे, जिन्हें उचकी लगी हो, वातव्याधि से पीड़ित, जिनका कफ क्षीण हुआ हो, छोटे बालक, मद्यपी, वृद्ध, शरीर से अत्यंत भारी, अशक्त, रात्रि में अधिक जागरण तथा जिनका भोजन नहीं हुआ है, ऐसे व्यक्तियों को दिन में सोना चाहिये।

सोने से पित्त नाश, मालिश करने से वात का नाश वमन करने से कफ का नाश और लंघन करने से ज्वर का नाश होता है। जब भी हमें ज्वर होता है, खाने की हमारी इच्छा नहीं होती। मुँह में कड़वापन आता है। उस समय प्राकृतिक रूप से हमारी पाचन शक्ति कम होती है। ऐसे समय लंघन अर्थात बिलकुल अन्न नहीं लेना, यह उत्तम है। केवल कुछ चुने हुये फल, धान की लाई भी अपनी भूख अनुसार लेना श्रेयस्कर है। भिन्न–भिन्न प्रकार के शरबत देना भी उपयोगी है। उसी तरह अन्न के सुपाचन के लिये कुनकुना जल पीना भी बहुत उपयोगी होता है। परंतु वर्तमान औषधि रचना में भूखे पेट औषधि देना नहीं

चाहिए, इसलिये पचाने की शक्ति नहीं होते हुये भी पेट में भोजन डालना ही पड़ता है। भोजन के तुरंत बाद खूब हँसना, रोना, अपवित्र गंध लेना, घृणास्पद शब्द न सुनना आदि बातों का ध्यान रखना चाहिये अन्यथा उल्टी होने की संभावना रहती है। उसी तरह तैरना, घुड़ सवारी करना (वाहन पर धड़–धड़ करते हुये जाना), बहुत अधिक समय तक बैठे रहना आदि न करना उत्तम है। उसी तरह मद्यपान, गीत गाना, दौडना, मैथुन कर्म, पढ़ना आदि कार्य भी पौन घंटा नहीं करना चाहिये।

एक भोजन की पाचन क्रिया होने के पूर्व कुछ नहीं खाना चाहिये। ऐसा करने से पहले खाया हुआ अन्न और बाद में लिया हुआ अन्न का ठीक से पाचन और उससे शरीर का पोषण जैसा होना चाहिये वैसा नहीं हो पाता। इसे शास्त्रीय भाषा में अध्ययन कहा जाता है। ऐसा करने से भूख अत्यधिक मंद हो जाती है।

जब भूख लगी हो उस समय अधिक पानी पीने से भी भूख मंद होती है। उसी तरह भोजन के बाद भी बहुत अधिक पानी नहीं पीना चाहिये। भोजन करते समय थोड़ा–थोड़ा जल अन्न के साथ लें।

अधिक पानी पीते रहने, कम–ज्यादा भोजन करना, मल–मूत्र की शंका होने पर उनका त्याग न करने, नींद के समय नहीं सोने, भोजन के समय भोजन न करने आदि सभी कारणों से अजीर्ण होता है।

संभवतः रात के समय दही नहीं खाना चाहिये। यदि किसी समय दही खाने में लिया जाना हो तो उसमें नमक, शक्कर, शहद, घी या मूंग की दाल मिलाकर खावें।

रात का भोजन हमारी जितनी भूख हो उससे कम खाना चाहिये।

रात्रि के भोजन के बाद शत पावली उत्तम है। रात्रि का भोजन और नींद के बीच कम–से–कम ढ़ाई से तीन घंटे का अन्तर होना चाहिये।

रात्रि का समय भय, मोह उत्पन्न करने वाला तथा पित्त हरने वाला और कांति उत्पन्न करने वाला है, ऐसा शास्त्र मत है।

रात्रि चर्या बाबद शास्त्र में विस्तृत मार्गदर्शन किया गया है। किस ऋतु में कैसा आचरण हो, प्रत्यक्ष कर्म के पूर्व और पश्चात शास्त्र का मार्गदर्शन योग्य उम्र में योग्य मार्गदर्शक से प्राप्त करना चाहिये।

वर्तमान समय में प्रचलित स्वैराचार, यह उचित ज्ञान उचित समय पर उचित व्यक्ति से प्राप्त करने पर परिवार व्यवस्था के आसान खतरों को निश्चित ही टाला जा सकता है।

उम्र, ऋतु, काल, खान–पान, आचरण और आहार इन सभी का प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य पर होता रहता है। इसीलिये दिन–रात का क्रम आहार–व्यायाम–आचरण, इन विषयों में प्रत्येक ऋतु का ज्ञान सभी के उपयोग के लिये शास्त्र में वर्णित है।

शतधौत घृत का महत्व

शीत ऋतु रुक्ष (रूखी) ऋतु है। इन दिनों में त्वचा फटती है। हाथ, पैर शरीर की त्वचा सूखी हो जाती है। इसके बाद ग्रीष्म ऋतु आती है। इन दिनों में सूखापन तो होता ही है, गर्मी भी महसूस होती है। ऐसे समय शतधौत घृत त्वचा पर लगाने से त्वचा तो नरम होती ही है ठंडापन भी लगता है।

शत से तात्पर्य 100। गाय का घी सौ बार शुद्ध पानी में घोटा जाता है, धोया जाता है इसीलिये उसे शतधौत घृत कहते हैं। 'घृत' घी का संस्कृत नाम है।

शतधौत घृत Sun Screen lotion के रूप में बहुत ही प्रभावी काम करता है। इसका नियमित उपयोग करने से त्वचा का उत्तम पोषण होता हैं और रंग भी उजला होता है। शरीर, पैर में जलन होने पर इसके स्पर्श मात्र से ठंडापन लगता है। दाह की जगह पर इसे लगाने से धीरे–धीरे दाह समाप्त होती है। जिनके चेहरे पर मुरम, तिल या मस्से होते रहते हों उनकी भी शतधौत घृत के उपयोग से त्वचा शुभ्र और कांतिमय होती है तथा भविष्य में इनके होने की संभावना समाप्त हो जाती है। इसके साथ ही त्वचा अत्यधिक मुलायम और तेजोमय होती है। शतधौत घृत नियमित रूप से लगाने पर यौवन बना रहता है और उससे चेहरे पर आनेवाली झुर्रियाँ कम होकर त्वचा ओजस्वी दिखाई देने लगती है। *(समाप्त)*

दूरभाष : 09422808175

वर्ष 2013-14 का केन्द्रीय बजट

गौ-आधारित कृषि की घोर उपेक्षा

28 फरवरी 2013 को वित्तमन्त्री महोदय ने 16 लाख करोड़ का केन्द्रीय बजट प्रस्तुत किया जिसमें गाय , गांव ,गरीब का कोई चिन्तन नहीं किया गया है। गरीब को मात्र कुछ सहायता दे देना समस्या का समाधान नहीं है। समस्या का स्थाई समाधान रोजगारयुक्त स्वाभिमानी भारत ही हो सकता है, जिसमें गौ आधारित कृषि महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है ।

गत 66 वर्षों से केन्द्र सरकार जो योजनाएं कृषि, गांव के बारे में बना रही है उसने गांव को कंगाल किया है। कृषि आय का हिस्सा समग्र राष्ट्रीय आय में घटा है। किसान भुखमरी, कंगाली, ऋण ग्रस्त समस्या से ग्रसित हुआ है। भूमि बंजरता की ओर बढ़ रही है। रासायनिक खादों से जल प्रदूषित हुआ है। इस प्रकार के आयोजन से निम्न दुष्परिणाम सामने आये हैं–

1– पंजाब जैसे उन्नत कृषि राज्य में कृषि भूमि बंजर होने की तरफ बढ़ रही है, क्योंकि वहां पर दिन–प्रतिदिन प्रति एकड़ रासायनिक खाद व कीटनाशकों की मात्रा बढाई जा रही है–देखें कृषि विश्वविद्यालय की नवीनतम अनुसंधान व सर्वे रिर्पोट। 2– उत्पादित अन्न व जल विषयुक्त होता जा रहा है। मां के स्तन का दुग्ध भी विषयुक्त हो गया है। 3– वर्तमान आधुनिक कृषि में कृषक इस तरह ऋण जाल में फंस गया है कि उसे आन्ध्र प्रदेश व महाराष्ट्र आदि राज्यो में आत्म हत्या करने को मजबूर होना पड़ रहा है।

4– सभी बड़ी सिंचाई परियोजनाओं पर अन्तर्राज्यीय जल विवाद बने हुए हैं– कावेरी विवाद, सरदार परियोजना विवाद, हरियाणा व पंजाब का विवाद आदि।

5– भूजल स्तर दिन प्रतिदिन नीचे जा रहा है व रासायनिक खादों के प्रयोग से जहरीला हो रहा है। 6– शंकर किस्म के बीज कुछ वर्षो में अच्छी फसल देते हैं। धीरे–धीरे अपनी मूल प्रवृत्ति की ओर लौट जाते हैं व उत्पादन परम्परागत बीज की तुलना में कहीं–कहीं घट जाता है और स्वाद व पोष्टिकता की दृष्टि से अन्न बढ़िया नहीं रहता। उदाहरणतः बासमती चावल, देशी 306 गेहूँ का मुकाबला परमल बासमती, 308 व कल्याण किस्म का गेहूं नहीं कर सकता। 7– दिन–प्रतिदिन ट्रैक्टरों के कारण डीजल पर विदेशी मुद्रा भारी मात्रा में खर्च करनी पड़ रही है व प्रदूषण फैलता है। 8– ट्रैक्टर के कारण सीमान्त किसान बेरोजगार हो गया है व उसकी कृषि लागत बढ़ रही है, क्योंकि वह अपने परम्परागत साधन से कृषि करने की जगह किराये के ट्रैक्टर से खेती करता है। 9– सीमान्त किसान व मजदूर बेरोजगार होने से सामाजिक असमानता बढ़ रही है व भुखमरी की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है। 10– बड़े–बड़े रासायनिक खाद के कारखानों में ,बड़ी सिंचाई परियोजनाओं में व ट्रैक्टर के लिए डीजल में

भारी मात्रा में विदेशी ऋण लिया जा रहा है जिससे देश विदेशी ऋण में फंसता जा रहा है। उपरोक्त सभी समस्याओं का हल गो आधारित कृषि है, जिसमें भू देवी व गौ देवी का समन्वय होगा व गाय, गांव, गरीब में खुशहाली आयेगी व देश में सुख शान्ति आयेगी।

गो आधारित कृषि के लाभ

1– खेतों को पानी की आवश्यकता 1/3 भाग रह जाती है, क्योंकि कम्पोस्ट खाद में खेत बलवान होता है व उसकी वर्षा ऋतु के दौरान जल सोखने की क्षमता बढ़ जाती है। खेत में ऐसे जीवाणु पैदा होते हैं जो खेत के लिये पानी की आवश्यकता कम करते हैं। बैलों व हल से खेती करने में भूमि का समतलीकरण भी नहीं बिगड़ता जबकि ट्रैक्टर से हेरो व कल्टीवेटर से खेती की जाती है, उससे बार–बार समतलीकरण बिगड़ता है तथा जुताई भी जब जमीन पर्याप्त कड़ी हो जाती है तब की जाती है। रासायनिक खादों से खेत की प्यास बढती है। यह उसी तरह है जिस तरह ऐलोपैथी दवाई लेने से पानी, जूस आदि अत्यधिक मात्रा में पीने पड़ते हैं, अन्यथा वह गर्म करती है।

2– रासायनिक खादों व कृत्रिम कीटनाशकों की आवश्यकता बहुत कम हो जायेगी। इसकी जगह गोबर गैस की खाद ,कम्पोस्ट खाद ,हरी पत्ती की खाद आदि ले लेगी। गोमूत्र में हल्दी की पत्ती, मीर्च की पत्ती ,तुलसी की पत्ती, नीम की पत्ती, ग्वार पटृटा, लहसुन आदि वनस्पति को मिला करके अच्छा कीटनाशक (मित्र जीवों को पैदा करने वाला रसायन) बनेगा, जो मानव के लिए हानिकारक नहीं है। **3– रोजगार के अवसर पैदा होंगे**– बैलों से खेती करने पर चार–पांच गुना रोजगार के अवसर कृषि में पैदा होंगे, क्योंकि जो कार्य एक ट्रैक्टर करता है उसके लिए चार जोड़ी बैलों की आवश्यकता पड़ेगी। इसी प्रकार अन्य कृषि सम्बन्धी रोजगार भी बढ़ेंगे । **4– कृषि लागत कम होगी** – शंकर बीजों की बजाये गोमूत्र व गोबर की खाद से अपने परम्परागत बीज पुष्ट होंगे व वे शंकर बीजों से अधिक उपयोगी साबित होंगे । **5– स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च कम होगा**– गो दुग्ध व गोघृत से मानव समाज स्वस्थ व पुष्ट रहेगा। हमारा स्वास्थ्य का बजट आश्चर्यजनक रूप से कम हो जायेगा। आजकल शहरों में बच्चों के जन्म के अवसर पर प्रायः माताओं के सरजीकल आप्रेशन करके बच्चे पैदा करने पड़ते हैं, जिसमें 30 हजार रु. से 50 हजार रु. खर्च आ जाते हैं। यदि हम गर्भवती महिला को 1 किलो गाय के दूध को दही व दूध के रूप में इस्तेमाल करायें तो खर्च बहुत कम आयेगा। बच्चा हृष्ट–पुष्ट होगा व आप्रेशन नहीं कराना होगा। **6– विदेशी मुद्रा की बचत होगी**– उपरोक्त सभी कारकों का यह प्रभाव होगा की हमें विदेशी मुद्रा की आवश्यकता नहीं होगी तथा हम विदेशी ऋण जाल से बचेंगे व ब्याज के रूप में जो भारी विदेशी मुद्रा देनी पड़ती है वह बचेगी।

7– ऊर्जा संकट हल होगा व पर्यावरण सुधरेगा– आधुनिक अर्थ शास्त्री का यह तर्क की गाय मानव खाद्यान्न पर अतिरिक्त बोझ डालती है– गाय व भारत के प्रति गहरा षड्यन्त्र है। गाय का आहार मानव आहार का पूरक है न कि प्रतिभोगी आहार अर्थात गाय भूसा, खली ,चोकर ,तुड़ी खाकर दूध जैसा अमृत पदार्थ देती है जो मानव के लिये वरदान है।

28 फरवरी 2013 को वित्तमन्त्री महोदय ने 16 लाख करोड़ का केन्द्रीय बजट प्रस्तुत किया, जिसमें गाय, गांव, गरीब का कोई चिन्तन नहीं किया गया है। गरीब को मात्र कुछ सहायता दे देना समस्या का समाधान नहीं है। समस्या का स्थाई समाधान रोजगारयुक्त स्वाभिमानी भारत ही हो सकता है, जिसमें गौ आधारित कृषि महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है ।

अतः योजनाकारों व केन्द्रीय वित्तमंत्री को चाहिए की वे गो आधारित कृषि व्यवस्था को भारत वर्ष में बढ़ावा देवें व शुरूआत में केन्द्रीय बजट की 10 प्रतिशत राशि भारतीय गोवंश के विकास के लिये निधार्रित करें जो कि इस बजट में 16 हजार करोड़ रुपये होती है। इस बारे में किस प्रकार 600 जिलों में योजनाएं बनाई जा सकती हैं, इसके लिये विस्तृत विचार–विमर्श भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्धन परिषद के पदाधिकारियों से किया जा सकता है, जो कि गत 20 वर्षों से गाय, गांव, गरीब, जल, जंगल को आधार मानकर गो आधारित कृषि के लिये प्रयासरत हैं।

राष्ट्रीय सह कोषाध्यक्ष, भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्धन परिषद्, दिल्ली
मो. : 9810055638

ऐतिहासिक रही बैलगाड़ी यात्रा

भीलवाड़ा (राज.)। महाशिवरात्रि (10 मार्च 2013) के पावन अवसर पर भीलवाड़ा शहर के इतिहास में पहली बार सही अर्थों में गौवंश को बचाने में महत्वपूर्ण प्रयास साबित हुई "बैल गाड़ी यात्रा"। महाशिवरात्रि के दिन बैल (नंदी) बचाओ समिति की ओर से आयोजित इस अनूठे आयोजन को देखकर भीलवाड़ा शहर की जनता को बहुत सुखद अहसास हुआ।

यात्रा संयोजक श्री सुरेश कुमार सेन ने बताया कि यात्रा को साकार करने के लिए बैलगाड़ी का पंजीकरण शुल्क 100 रु. रखा गया और 101 बैलगाड़ियों को यात्रा में सामिल करने का लक्ष्य रखा गया। यात्रा में केवल देशी नस्ल के बैलों वाली गाड़ियों को ही शामिल किया गया। प्रतिष्ठित अतिथि भीलवाड़ा डेयरी के चेयरमेन मा. रतनलालजी जाट ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन के बाद यात्रा को रवाना किया। गांवों से आये किसान, महिलाएं और सैकड़ों अन्य गणमान्य व्यक्ति बैलगाड़ी यात्रा में सामिल हुए।

लगभग 2 बजे सम्मान समारोह प्रारंभ हुआ। सर्वप्रथम पूज्य संत श्री गोपालदासजी महाराज और श्री मनोहरशरणजी शास्त्री ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने कहा कि इस यात्रा से किसानों में जागृति आयेगी और बैलों को बचाने में यह यात्रा महत्वपूर्ण रहेगी।

समारोह के मुख्यवक्ता हुकुमचंदजी सावला ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में कहा कि इस देश में प्रमुखरूप से चार क्रांन्तियां हुई हैं जिसमें हरित क्रान्ति, श्वेत क्रान्ति, पीली क्राान्ति, नीली क्रान्ति प्रमुख हैं। हरित क्रान्ति के लिए राशायनिक खाद और पेस्टीसाइज दवाइंया आई इसके कारण अन्न का उत्पादन तो बढ़ा लेकिन हमारे पारम्परिक बीज, पारम्परिक गेहूं सहित कई पारंम्परिक खाद सामग्री हमसे दूर हो गई है। कर्जदार खेती होने के कारण आज किसान आत्महत्याएं कर रहा है। सावलाजी ने कहा कि आज बाजार में दूध के नाम पर जहर बिक रहा है। श्वेत क्रान्ति के कारण दूध तो खूब बढ़ा लेकिन हमारी देशी नस्ल की गाय समाप्त हो गई। पहले भारत में लगभग 80 प्रकार का गौवंश मौजूद था जो घट कर केवल 20 प्रकार का ही रह गया है। उन्होंने आह्‌वान किया कि आने वाले समय में और अधिक विकट स्थिति से निपटने के लिए जैविक खेती की ओर बढ़ना होगा। आज बैलगाड़ी यात्रा से इसका श्रीगणेश हो गया है। किसान भाई कम–से–कम अपने लिए तो जैविक खेती अवश्य करें। समारोह के अन्त में श्रेष्ठ बैलों और बैलगाड़ियों के किसानों को नकद व अन्य पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

साभार–गौ दर्शन

मवेशियों से भरे चार ट्रक ग्रामीणों की मदद से पुलिस ने पकड़े

पृथ्वीपुर (म. प्र.)। टीकमगढ़ से झांसी की ओर जा रहे मवेशियों से भरे चार ट्रक एक साथ एक सीमित रफ्तार से चलने से राधासागर तालाब पर नहा रहे नगरवासियों को इन ट्रकों पर शक हुआ और जैसे ही इन ट्रकों को नगरवासियों ने रुकवाने का प्रयास किया, लेकिन दो ट्रक भागने में सफल हो गये जबकि दो ट्रकों को नगरवासियों ने वहीं रोक लिया।

जिसकी सूचना नागरिकों ने पुलिस को दी और पुलिस ने भागे हुये ट्रकों को फब्बारे चौराहे के पास अपनी गिरफ्त में ले लिया। इस तरह चारों ट्रकों में छोटे–बड़े 68 प्राणी लदे हुये पाये गये। पुलिस ने चारों ट्रकों के विरुद्ध पुलिस अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर लिया।

पुलिस ने आरोपी अजय अहिर्वार निवासी कालपी, उसमान खान कानपुर देहात, शिवकुमार अहिर्वार कानपुर देहात, गौस मुहम्मद भौगनीपुर को ट्रकों सहित पकड़ लिया। थाना प्रभारी पीएम जैन ने बताया कि उक्त चारों ट्रकों के ड्राइवरों के विरुद्ध एवं ट्रक मालिकों के विरुद्ध पशु अधिनियम 1960 के तहत कार्यवाही कर मवेशियों को ट्रक से मुक्त कराया। इस तरह 68 मवेशियों को कटने से नगरवासियों की मदद से बचा लिया गया।

दिल्ली में पंचगव्य चिकित्सालय शुरू

नई दिल्ली। दिल्ली के राणा प्रताप बाग स्थित के–101 प्राचीन शिव मन्दिर इन्द्र धर्मकांटा में दिल्ली का पहला पंचगव्य आयुर्वेदिक धर्मार्थ चिकित्सालय गत माह महाशिवरात्रि के शुभअवसर पर शुंभारम्भ किया गया।

भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्धन परिषद् की प्रेरणा से गोवरदान विज्ञान अनुसंधान संस्थान द्वारा यह चिकित्सालय प्रारम्भ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राजेन्द्र सिंहल ने की। कार्यक्रम की शुरूआत विधिवत् पूजा–अर्चना से की गई और गो पुष्टि यज्ञ करके प्रांत सह संघ चालक श्री श्याम सुंदर व श्री ताराचंद गुप्ता, प्रांत प्रमुख विहिप गोरक्षा आयाम ने इसका शुभारंभ किया। श्री श्याम सुंदर ने बताया कि गाय आध्यातिमक दृष्टि से ही नहीं वरन् आर्थिक दृष्टि से व वैज्ञानिक और सामाजिक दृष्टि से भी हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं यहाँ तक कि इनका दुग्ध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र हमारे जीवन को आरोग्याता, आर्थिक समपन्नता, शारीरिक मानसिक पुष्टता और पर्यावरण की रक्षा करता है। इसलिए कहा जाता है कि **गावो रक्षति रक्षितः।**

प्रान्त प्रमुख ताराचंद गुप्ता ने आह्वान किया कि गो–वरदान विज्ञान अनुसंधान को दिल्ली के प्रत्येक क्षेत्र में प्रत्येक सप्ताह फ्री मेडिकल कैंप लगाकर लोगों को रोगमुक्त करना चाहिऐ। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंहल ने बताया कि वर्तमान सरकार नाम तो गौमाता का लेती है पर काम उसकी संख्या घटाने का करती है। कार्यक्रम का संचालन करते हुये श्री राष्ट्र प्रकाश ने बताया कि भारत सरकार योजनापूर्वक इस देश से गोमाता को समाप्त करने पर तुली हुई है। इसीलिये कभी वो राष्टमंडल खेलों में गोमांस परोसने की बात करती है तो कभी गोमाता का निर्यात खोलने की बात करती है।

अंत में कार्यक्रम के आयोजक प. मक्खन लाल गौड़ को शुभकामनाएं देते हुए प्रांत महामंत्री श्री लवकेश गौड़ ने विलुप्त होते गोपुष्टि यज्ञ की परपंरा को जीवित करने का लक्ष्य रखते हुए दिल्ली में 1008 यज्ञों को करवाने की घोषणा की और दिल्ली के चारों कोनों में पंचगव्य आयुर्वेदिक चिकित्सालय खोलने के प्रयासों की जानकारी दी। लवकेश गौड़ ने महावीर प्रताप हारिया, सुखवीर सैनी उत्तम अग्रवाल डॉ. राधाकांत वत्स, नारायण दत्त शर्मा, श्रीमती पुष्पा शर्मा, सीमा कपिल गुप्ता, अरविंद मिश्रा, अतुल गोला, संजीव हंस, पुनीत वोहरा, दीवान चंद, वेद प्रकाश तनेजा, अशोक हीरा, चन्द्रमणि शर्मा, सुनील दत्त शर्मा, रवि पाल आदि गोभक्तों को उनके सहयोग के लिये धन्यवाद दिया। अंत में सैकड़ों गोभक्तों ने गौ दुग्ध और फलाहार करके गोमाता का आशीर्वाद रूपी चित्र और सम्मान पट्टिका प्राप्त की।

प्रस्तुति– लवकेश गौड़

मृत्यु के बाद गाय के अंगों का उपयोग बंद हो : आरिफ अकील

भोपाल। कांग्रेस विधायक आरिफ अकील ने शून्यकाल में मांग की कि मृत्यु के बाद गाय के अंगों का उपयोग बंद होना चाहिए। उन्होंने कहा कि माता की तरह पूजने वाली गाय के अंगों का उपयोग करने की बजाय ससम्मान अंतिम संस्कार किया जाना चाहिए। विधानसभा अध्यक्ष से अकील ने कहा कि उन्होंने इस संबंध में अशासकीय संकल्प दिया है, उस पर सदन में चर्चा कराएं। अध्यक्ष ने उन्हें विचार करने का आश्वासन दिया।

साभार– दैनिक भास्कर, भोपाल

रायपुर में गोसंस्कृति सम्मेलन

रायपुर (छ.ग.)। गोरक्षा आयाम के केन्द्रीय मंत्री श्री उमेश पोरवाल ने बताया कि 27–28 अप्रैल को मध्य क्षेत्र गोसंस्कृति 2013 सम्मेलन रायपुर (छत्तीसगढ़) में आयोजित किया जा रहा है। सभी गोभक्तों से आग्रह है कि वे इस कार्यक्रम में भाग लेकर लाभ उठायें।

गाय की रक्षा जरूरी : अनिल जोशी

तरनतारन (पंजाब)। श्री गोपाल गौशाला व अनुसंधान केन्द्र तरनतारन द्वारा जिले भर के स्कूली विद्यार्थियों की ली गई गौ विज्ञान परीक्षाओं के नतीजे का ऐलान करने के लिए गत माह गौशाला पंडोरी रोड (तरनतारन) में समारोह किया गया। इसमें कैबिनेट मंत्री श्री अनिल जोशी मुख्य मेहमान थे। उनके साथ विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय मंत्री श्री खेमचंद्र शर्मा व पंजाब के कार्यकारी अध्यक्ष श्री संतोष गुप्ता भी मौजूद थे। समारोह की अध्यक्षता निर्मल कुटिया शाहबाजपुर वाले संत दविंदर सिंह ने की।

संबोधित करते हुए श्री जोशी ने कहा कि श्री गोपाल गौशाला व अनुसंधान केन्द्र तरनतारन द्वारा गौमाता के प्रचार व उसकी रक्षा के तहत चलाए गए अभियान के तहत ली गई इस परीक्षा का मकसद आज की पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़ना है। उन्होंने कहा कि अगर समाज में गौमाता की रक्षा नहीं होगी तो हमारा देश व परिवार की भी रक्षा नहीं हो सकती। विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय मंत्री श्री खेमचंद शर्मा व संत दविंदर सिंह ने कहा कि आजादी से पहले देश में सिर्फ 300 बूचड़खाने थे मगर आज पूरे देश में 40 हजार से अधिक बूचड़खाने हैं जो चिंता का विषय है।

परिणामों के तहत नवरीत कौर ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल नौशहरा व भूपिंदर कौर वीवीएन पब्लिक स्कूल नौशहरा के बच्चे पहले, सनोहित मदान पीसी स्कूल तरनतारन दूसरे व जगजीत कौर ऑक्सफोर्ड स्कूल नौशहरा तीसरे स्थान पर रहे।

साभार – दैनिक जागरण

वृजप्रांत एवं उत्तराखंड गोरक्षा आयाम की बैठकें संपन्न

अलीगढ़ (उ.प्र.)। अलीगढ़ में गत 17 फरवरी को बृज प्रांत (गोरक्षा आयाम) की प्रांतीय बैठक आयोजित की गई। बैठक में गोरक्षा आयाम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री मा. खेमचंद शर्मा जी, संयुक्त क्षेत्रीय गोरक्षा प्रमुख श्री वासुदेव पटेल एवं प्रांतीय गोरक्षा प्रमुख श्री कृष्ण कुमार एडवोकेट विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राकेश जी ने की। कार्यक्रम के दौरान अनेक विषय, जैसे– प्रांतीय टीम की सक्रियता, गोवंश कैसे बचे, हित चिंतक बनाना, गौसंस्कृति एवं किसान सम्मेलन का समय निश्चित करना, गौपर्वों पर आयोजन, पत्रिका 'गोसम्पदा' के सदस्य बनाना और आगामी प्रांतीय बैठकों के संदर्भ में विचार–विमर्श किया गया।

इसी प्रकार गत 28 फरवरी को उत्तराखंड की बैठक चकुलया फार्म, हलद्वानी, नैनीताल में संपन्न हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री हरि किशन लाल चड्ढा एवं संचालन श्री सुधीर चड्ढा ने किया। इस अवसर पर श्री भारत भूषण, श्री जे.पी. त्रिपाठी, प्रांत गोरक्षा प्रमुख श्याम विष्ठ आदि उपस्थित थे। बैठक में आगामी कार्यक्रमों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई।

प्रस्तुति–वासुदेव पटेल

रामायण से संबंधित प्रश्नों के उत्तर

1. वाल्मीकि
2. 24000
3. अयोध्या
4. सूर्यवंशी
5. सरयु
6. कौशल्या–दशरथ
7. वशिष्ठ
8. रघुनन्दन, राघव
9. श्रवण कुमार के माता–पिता ने
10. विश्वामित्र
11. ताड़का
12. रावण की नानी
13. कैकेयी
14. सुमित्रा
15. मंथरा
16. उत्तर प्रदेश
17. सात
18. रामचरित मानस
19. जनकपुर में
20. उर्मिला
21. उर्मिला, माण्डवी, श्रुतिकीर्ति
22. केवट
23. गुह
24. चित्रकूट में
25. अनुसूया
26. अहिल्या
27. गौतम
28. रावण की बहन
29. पंचवटी
30. मारीच

बूचड़खाना खुला तो आंदोलन करेंगे : खेमचंद शर्मा

रांची। विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय मंत्री एवं गोरक्षा विभाग के संगठन मंत्री श्री खेमचंद शर्मा ने कहा कि कांके में प्रस्तावित बूचड़खाना बना तो इसका पुरजोर विरोध किया जएगा। गतमाह वे विहिप कार्यालय में पत्रकार वार्ता में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि आजादी के समय तक देश में 360 बूचड़खाने थे और आज इनकी संख्या बढ़कर चालीस हजार हो गई है। साठ हजार गायों को रोज काटा जाता है। उन्होंने इस बात पर चिंता जाहिर की कि जब देश की आबादी 35 करोड़ थी तब गायों की संख्या 117 करोड़ थी। अब देश की आबादी सवा सौ करोड़ है तो गोवंश महज 18 करोड़ है।

सरकार की नीतियों के कारण गायों की संख्या तेजी से घट रही है। अब सरकार को चाहिए कि सख्त कानून बनाए, तभी गायों को बचाया जा सकता है। सरकार अब गांधी जी की बात को भी कोई तवज्जो नहीं देती। गांधी ने कहा था कि आजादी के बाद सबसे पहले गोरक्षा कानून बनेगा, लेकिन हुआ कुछ नहीं। सरकार को फिक्र है कि वह दुनिया में सबसे बड़ा गो–मांस का निर्यातक देश कैसे बन जाए? सरकार के कारिंदे इस तरह के सुझाव भी दे रहे हैं कि मनुष्य के शरीर में आक्सीजन की वृद्धि के लिए गाय का मांस व हरी सब्जी खानी चाहिए। इसका विरोध हुआ तो इसे वापस लिया गया। उन्होंने कहा कि हर रोज 25 हजार गायों की तस्करी की जाती है। विहिप ने झाारखंड में पंद्रह सौ गायों को तस्करों के चंगुल से बचाया है। उन्होंने बताया कि विहिप पूरे देश में चार सौ गोशालाएं चलाती है और एक हजार गोशालाओं से संपर्क है। उन्होंने गाय बचाने के लिए गो मूत्र व गोबर के उपयोग पर बल देते हुए कहा कि जब खेतों में गोबर खाद का उपयोग होगा तो किसानों को भी इसका लाभ होगा। वे गायों को नहीं बेचेंगे।

गोवंश रक्षण–संवर्धन परिषद की बैठक संपन्न

मानपुर (गया)। गतमाह मानपुर के गौरक्षणी मुहल्ले स्थित श्री गया गोशाला परिसर में गोवंश की रक्षा हेतु भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्धन परिषद की बैठक आयोजित की गई। जिसमें गो तस्करी पर रोक लगाने का निर्णय लिया गया।

बैठक में उपस्थित त्रिलोकी नाथ बागी ने कहा कि रोजाना बिहार से बीस ट्रक पशुओं को पूर्णिया के रास्ते बंगाल भेजा जाता है। उक्त कार्यक्रम में शिवराम डालमिया, साहित्यकार गोवर्द्धन प्रसाद, शशिकान्त मिश्रा, विद्या विनोद, बलीराम शर्मा व नीलम श्रीवास्तव सहित दर्जनों नागरिक गणमान्य शामिल रहे।

साभार–दै. जागरण

आक्रोशित भीड़ ने की एस आई की धुनाई

गो मांस बेचने के विरोध में गत माह चक्काजाम कर रहे लोगों का गुस्सा तब और भड़क गया जब तखतपुर थाने के एसआई ने गाय के मांस को सूअर का बता दिया। गुस्साई भीड़ ने एसआई की जमकर धुनाई कर दी। मारपीट से पस्त एसआई मौके पर ही बैठ गए।

बिलासपुर (तखतपुर), छ.ग.। चक्काजाम की सूचना मिलते ही एसआई उदय पटेल कुछ पुलिसकर्मियों को लेकर मौके पर पहुंच गए। भीड़ की मांग पर भी उन्होंने गो मांस जब्त नहीं किया। उल्टे गो मांस को सूअर का बताकर उन्होंने भीड़ को उकसा दिया। फिर क्या था, भीड़ एसआई पर टूट पड़ी और देखते ही देखते भीड़ ने उनकी जमकर पिटाई कर दी। चूंकि पुलिस कम थी। इसलिए यह नजारा देख पुलिसकर्मी सकते में आए। किसी तरह से उन्होंने हिम्मत जुटकार भीड़ से एसआई पटेल को बाहर निकाला और इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा। इस बीच पुलिस के आला अफसर भी तखतपुर पहुंच गए थे।

रात तक जुटी रही भीड़

सुबह से शुरू हुआ बवाल देर शाम तक चलता रहा। आरोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज होने के बाद भी भीड़ उसकी गिरफ्तारी की मांग करती रही। हालांकि एसपी भी श्री डांगी की समझाइश पर करीब शाम 4:30 बजे चक्काजाम समाप्त हो गया।

प्रस्तुति–उमेश पोरवाल

Protecting Cattle is Central to the Work of Myriad Organisations throughout the Country. Gau Gyan Foundation in Delhi, set up by a group of journalists, actively intercedes to save smuggled cattle by putting pressure on police and politicos.

Cattle Politics

On the way back to their sheds at dusk, the tranquil hour of godhuli – so named because of the dust kicked up by their hooves – cattle halt to drink water at a large water reservoir. Hundreds of cows, bulls and calves quench their thirst before heading towards the large gaushala, nestling amidst the Vindhya hills. That is their safe haven for the night, on the premises of the sprawling shree Devraha Baba Ashram. After the legendary guru relinquished the body in June 1990, his mantle fell on his spiritual successor Shree Devraha Hans Baba. This revered siddh yogi took part in the 1966 Goraksha Andolan that was brutally crushed in November by the Indira Gandhi-headed Government at the Centre. This violent response to the legitimate demand to ban cow slaughter, in line with sentiments of the majority community, soon after Mrs. Gandhi was sworn in as Prime Minister on January 19, 1966, underlined the Congress's arrogant disregard for Hindu concerns.

Article 48 under Directive Principles of State Policy in the Constitution advised banning slaughter of "cows and calves and other milch and draught animals". The Nehrus, however, were anglicized. Krishna Hutheesing, Pandit Nehru's youngest sister, recalled in We Nehrus, published in 1967 by Holt, Rinehart and Winston: "Our lunch was always of the British style and that is why we always used to have lunch in a hotel because only the British lunch included beef and pork. If beef and pork were to be brought into the home, our mother and Muslim servants would have felt bad".

Yet, Goseva, service to cows and, by extension, cattle, is integral to the tradition of protecting India's spiritual and cultural heritage. A campaign to sensitise people and save cattle from slaughter houses and traffickers is being directed under the aegis of the Brahmvetta Shree Devraha Hans Baba Trust. Even abandoned cows, too old to give milk, are given refuge in the Vindhyachal shelters and gaushalas in Vrindavan and other ashrams. It is a non-profit exercise, requiring massive funds on a continuing basis.

Trafficking and Antidote

Here, in eastern Uttar Pradesh, cattle find abundant gauchar for grazing, in contrast to western Uttar Pradesh, where lush pastures and farmland have increasingly fallen prey to indiscriminate development, with unfortunate consequences for cattle. Traffickers are very active in the area. The trend is replicated in all parts, and glaringly visible in Diu and Daman, Rajasthan, Uttarakhand, Himachal Pradesh, Madhya Pradesh, Kerala, and especially West Bengal and Assam, contiguous to the border with Bangladesh, where Indian beef, leather and other cattle derivates are in high demand.

Indian cattle trade reportedly feeds an estimated Rs.2,000 crore-beef industry in Bangladesh. The outgoing Border Security Force chief UK Bansal raised the hackles of animal rights activists and Hindus by proposing in December 2012 that cattle trafficking across the border be legalized. It was an indirect admission of BSF failure to halt such trade, linked to arms smuggling and terror funding. Numerous tanneries and abattoirs have mushroomed on the border.

Protecting cattle is central to the work of myriad organizations throughout the country. Gau Gyan Foundation in Delhi, set up by a group of journalists, actively intercedes to save the smuggled cattle by pressurizing police and politicos. It also networks with other bodies such as Dhyan Foundation that maintains a gaushala for injured, sick and abandoned cattle

in Orchha in Madhya Pradesh, and extends care in Delhi, Baroda (Rajasthan), Sitapur, and Mauranipur (Uttar Pradesh), Berausagar, Sarkar and Binaura Mahoba (Madhya Pradesh).

Maharishi Dayanand Gosamwardhan Kendra near Delhi's ISBT works towards improving the health and productivity of native breeds, with their A2-type milk being cited as being best for human health. The American HF breed cows yield A1 type of milk, blamed for causing metabolic diseases. The Kendra opposes government programmes for cross-breeding so as to enhance milk production.

Individual initiatives may be inter-religious, as in the case of a gaushala set up by Human Care Charitable Trust in Kheri Kalan village, Ferozpurjhirka tehsil in Muslim-dominated Mewat. Managing Trustee NP Thareja instituted the venture on land belonging to Mohammed Hasin Khan, panchayat officer, whose higher education was funded by the trust. Selling milk and its products may set a precedent for other poor Muslim families in the area to nurture cattle. Dung and urine are cheaper alternatives to agrochemicals while bio-gas is sourced from dung, and Ayurvedic medicines from various derivatives. The exercise could promote a cultural transition in Mewat, otherwise notorious for trafficking.

Subverting Tradition

Goseva was an ideal cherished by Mahatma Gandhi and other stalwarts of the freedom struggle. He and his followers shared with Hindu nationalists reverence for cattle and Indian's unique civilisational ethos. However, traditionalists made little headway after India attained freedom. Secular precepts generally weighed against them. The arid utilitarian doctrine became the national creed. This led the ruling Congress to flout the constitutional directive for a nationwide ban on cow slaughter.

Belief in the cow's sanctity, as a repository of divine forces, was too deep-rooted to be ignored. The cow was sarvadevmayi in the Vedas": It contained all the gods. So, there was no question of killing or eating it as such a course was sacrilegious. And dying at a place, where cows stayed, ensured salvation. Donation of cows or symbols of these divine animals to gurus and deserving Brahmins was a highly recommended act of piety. Goseva was considered an effective antidote for misfortune and means for attaining good fortune. Butchering incurred divine wrath, inviting retribution. It was futile to try and supplant metaphysical subtleties with dry logic.

Between 1880 and 1894, there were strong movements against cow slaughter. Some Muslims and Parsis also joined in. Butchering of cattle for beef, bones and leather on a large scale was begun by the British from the mid-18th century onwards, to meet their own needs. Robert Clive was instrumental in setting up the first abattoir in Calcutta in 1760. Cows and bulls were also shipped to Britain. Wanton disregard for prevalent taboos triggered the sepoy rebellion in May 1857, with Hindu and Muslim soldiers in the Company's forces rising up against their superiors for compelling them to bite cartridges, rumoured to be greased with pig and cow fat. The cow belt in the north was the principal scene of the violent reprisal against White traders.

The uprising was crushed with the help of Indian feudatories, merchant collaborators and some princely states. By 1858, power passed to the British crown. Now began a systematic campaign to convince Hindus through misinterpretations Vedas and other religious texts that their forbears had eaten beef and sacrificed cows and oxen. Muslims being more volatile in their reactions, a similar exercise to remove the stigma against pork was not undertaken. Since Hindus were chary of working as butchers, considered untouchables, Muslims were recruited for the job. Cattle and other animals began to be diverted to slaughter houses. After the 1857 uprising, the British set in force a subversive plan of distorting Sanskrit injunctions on food via flawed English translations that turned concepts of one-ness of life and ahimsa on their head.

The word mansa, denoting pulp, was rendered into English as meat, and so disseminated through myriad renditions. A popular verse on conquest of ageing and death via Khechari Mudra, a yogic practice, commonly referred to as "go maas bhakshan", was interpreted as consumption of beef. And madyapaan, enjoying the nectar that dropped from the cerebrum, Brahamarandhra, was interpreted as drinking liquor.

Cows were actually termed aghnya,

worthy of not being injured, and the gods were gojaat, kin of kine. Sanskrit verses could be twisted out of context, such as this line in the Mahabharata: "Cows are food itself".

The colonisers requisitioned the services of some pliant natives. A book by Pandurang Kane, a Bombay advocate and Marathi Brahmin, postulated in History of Dharmashastras that beef was consumed in the Vedic age. Rajendralal Mitra's 'Beef in Ancient India', published in 1872, grew into a book, Indo-Aryans: Contributions towards the Elucidation of their Ancient and Medieval history, published in 1881. Drawing from motivated Western translations of Sanskrit texts, his exposition of the Aryan milieu showed celestial beings, sages, the avatars Rama, Lakshman, Sita, Krishna and his brother Balaram as fierce carnivores and fond of spirits. Aryan society seemed to be a vast abattoir-cum-distillery, evoking the Western social milieu. Yet, Vedas clearly stated "Ahimsa prathmo dharma" (non-violence was the foremost dharma). In an utterly ludicrous rendition, Sita pleaded with Goddess Ganga for mercy, promising that on her return home, she would worship her with a thousand jars of arrack, country liquor, and rice, dressed with flesh, suggestive of the Muslim biryani. This was sacrilegious Vaishnav tradition. An allusion to the Mahabharata cited Rantideva, a king, who slaughtered 2,000 cattle every day. He earned immense merit by daily "feeding miserable hosts of beggars with beef".

Lobbying Everywhere

Mitra was an early lobbyist for British trade in liquor, meat, eggs, leather, bones, etc. Beef-eating clubs sprouted in Bengal. Mitra became the first native president of the Asiatic Society in Calcutta founded in 1874 by the Indologist, Sir William Jones. It was meant to promote Oriental studies and translations. Hindu texts were filtered purposely through colonial prisms.However, scholars of an opposing school found such works entrenched with grave errors, intended to alienate educated Hindus from their religion. Swami Dayanand Saraswati, who founded Arya Samaj in 1875, tried to undo ugly distortions via his commentaries on the Vedas and other writings in Hindi and Sanskrit. He rectified numerous blasphemies in interpretations, and took the lead in demanding a ban on cattle slaughter.

Gandhi made a public demand for a ban in 1926 in Madras. Mitra's essay was immediately reprinted and distributed free of cost in Calcutta. Other endorsements of this fabricated view by Hindus were also publicized. Muslims being insidiously convinced that it was their religious duty to butcher cows, opposed Hindus. This led to communal riots over incidents of public slaughter. Yet, some Muslim rulers such as Mohammad bin Qasim in Sindh and Multan in the eighth century, and even Aurangzeb was said to have tried to prohibit cow slaughter. In 1896, Dogra Maharajas of Kashmir had banned slaughter of cows and buffaloes. When some States, obeying Article 48, banned killing of cattle, a petition was filed against the move in Patna High Court by the butchers' lobby. Petitioners moved the Supreme Court against the High Court verdict. The apex court in 1958 dismissed the contention that cow slaughter was a religious duty under Islam. It cited economic reasons for totally prohibiting slaughter of cows and calves though allowing impotent bulls to be killed.

Religious savants revived the Goraksha Andolan in 1966-67. Mitra's essay was reprinted and distributed free of cost in cities. A fast-unto-death, undertaken by sadhus, forced Mrs. Gandhi's Government in January 1967 to set up a committee to review the issue. After six years, the committee gave an interim report that merely advised the Government to enact laws concerning cattle preservation within the ambit of the Supreme Court judgement. In 1979, the Janata Government at the Centre finally dissolved the committee, without the final report ever having been submitted. Acharya Vinoba Bhave then pressurized Mrs. Gandhi to make the States institute laws in keeping with the Supreme Court directive for a partial ban. His objective was to prohibit cow slaughter completely. On January 11, 1982, ceaseless satyagraha against slaughter of cattle was launched at Deonar in Mumbai at the Acharya's behest.

Significantly, the onset of economic liberalization in 1991 led to a spate of supposedly scholarly works, reiterating the discredited claims about beef-eating among Vedic Hindus. There being few takers for this absurd theory, beef fortunately still remains taboo.

Courtesy : Pioneer